www.ghoonghatkibagawat www.ghoonghatkibagawat ghoonghatkibagawat37@gmail.com

घूँघट की बगावत

UP/HIN/1999/1282

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित | हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 24 अंक : 49 | गोरखपुर, 22 जून 2025 रविवार | पृष्ठ : 6 | मूल्य : 2

उच्चतम न्यायालय की पूर्ण अदालत ने लिया शीशे के पैनल को हटाने का निर्णय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय प्रशासन ने गत शनिवार को कहा कि बार संगठनों से प्राप्त आवेदन का संज्ञान लेने के बाद पूर्ण अदालत ने अदालत कक्ष संख्या एक से पांच तक के सामने लगे शीशे के पैनल को हटाने का निर्णय लिया है। उच्चतम न्यायालय प्रशासन ने एक बयान में कहा कि पूर्ण अदालत ने शीशे के पैनल को हटाने के संबंध में सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) और सुप्रीम कोर्ट एडवोकेट्स-ऑन-रिकॉर्ड एसोसिएशन (एससीएओआरए) से प्राप्त ज्ञापन पर गौर किया है।

बयान में कहा गया है, मूल भव्यता, दृश्यता, सौंदर्यबोध और न्यायालय कक्ष तक पहुंच से संबंधित चिंताओं समेत विभिन्न मुद्दों पर सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद, पूर्ण अदालत ने शीशे के पैनल को हटाने का निर्णय लिया। पिछले वर्ष दिसंबर में, सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) ने तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना से वातानुकूलन के लिए लगाए गए शीशे के पैनल को हटाने और इसके ऐतिहासिक महत्व को संरक्षित करने के लिए उच्चतम न्यायालय के गलियारों के मूल स्वरूप को बहाल करने का अनुरोध किया था। तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश को लिखे पत्र में एससीबीए ने कहा था कि वातानुकूलन के लिये लगाये गये शीशे के पैनल के कारण गलियारे में जगह काफी कम हो गई है, जिसके चलते खासकर व्यस्त समय में बार के सदस्यों, पंजीकृत लिपिकों, प्रशिक्षुओं और वादियों को आने-जाने में परेशानी होती है। पत्र में कहा गया था, हम उच्चतम न्यायालय के ऐतिहासिक महत्व को संरक्षित करने के लिए शीशे के पैनल को हटाने और गलियारे को मूल स्वरूप में बहाल करने का अनुरोध करते हैं।

महाराष्ट्र सदन में योगाभ्यास कर उत्साह के साथ मना अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

नई दिल्ली। महाराष्ट्र सदन के बैंक्वेट हॉल में योगाभ्यास कर उत्साह के साथ ह्यअंतरराष्ट्रीय योग दिवसह्न मनाया गया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर केंद्रीय आयुष मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री. प्रतापराव जाधव ने महाराष्ट्र सूचनाकेंद्र को दिए अपने संदेश में योग के महत्व को समझाते हुए कहा, ह्लयोग भारत को एक प्राचीन उपहार है, जो शरीर, मन और आत्मा को स्वस्थ रखता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से योगाभ्यास एक वैश्विक आंदोलन बन गया है। आइए हम एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य योग की अवधारणा के तहत योग का प्रसार करें और फिट इंडिया और स्वस्थ भारत के संकल्प को साकार करें।

महाराष्ट्र सदन में आयोजित योगाभ्यास सत्र में रेजिडेंट कमिश्नर और सचिव आर. विमला ने कहा, प्रतिदिन सिर्फ पांच मिनट योग करने से मन और शरीर स्वस्थ रहता है, साथ ही आप तरोताजा और प्रफुल्लित भी रहते हैं। योग को जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। नियमित योगाभ्यास से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बना रहता है, जिससे व्यक्ति दैनिक जिम्मेदारियों को कुशलतापूर्वक निभा सकता है।

मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान की प्रशिक्षक निशा चंद ने योग के महत्व को समझाया और प्रदर्शन प्रस्तुत किए। सहायक स्थानिक आयुक्त स्मिता शेलार, सूचना अधिकारी अंजू निमसरकर, प्रबंधक प्रमोद कोलपटे, सहायक सुरक्षा अधिकारी अनिल चोरगे,

सरकार ने तैयार की व्यापक कार्ययोजना

लोधी रोड और द्वारका में लगाए आधुनिक धूलरोधी सिस्टम



नई दिल्ली। राजधानी में धूल को नियंत्रित करने के लिए लोधी रोड और द्वारका में आधुनिक ऑटोमैटिक मिस्ट सिस्टम लगाए गए हैं। इनके ड्यूल नोजल 360 डिग्री में अति सूक्ष्म फुहारें छोड़ते हैं, जिससे धूल को दबाने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद मिल रही है।

पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने शुक्रवार को लोधी रोड पर इसका जायजा लिया। उन्होंने बताया कि शहर के 25 प्रमुख मार्गों और प्रदूषण हॉटस्पॉट पर ऐसे सिस्टम लगाए जा रहे हैं। इससे दिल्ली की हवा को साफ करने की दिशा में मदद मिल रही है।

दिल्ली सरकार ने प्रदूषण से निपटने के लिए डेटा-ड्रिवन और तकनीक आधारित समाधान तलाशे हैं। लोधी रोड पर 560 मीटर में 15 पोल लगाए गए हैं। हर पोल पर 30 हाईप्रेशर ब्रास और स्टेनलेस स्टील मिस्टिंग नोजल लगाए गए हैं, जो 40 बार प्रेशर पर 2.8 लीटर प्रति घंटे की दर से पानी की फुहार छोड़ते हैं। इन्हें 10 एचपी के मिस्टिंग पंप से चलाया जा रहा है, जिसमें एसएस पाइपलाइन, आरओ यूनिट, पीवीसी टैंक, कंट्रोल पैनल और एक पंप रूम शामिल है। लोधी रोड, द्वारका के अलावा अफ्रीका एवेन्यू (850 मीटर, 30 पोल) और शांति पथ (900 मीटर, 30 पोल) पर भी ऐसे ही सिस्टम लगाए जा रहे हैं।

अगले चरण में दिल्ली में 25 से अधिक प्रमुख सड़कों, भगवान दास रोड, तिलक मार्ग, जाकिर हुसैन मार्ग, शाहजहां रोड, अशोक रोड, हनुमान मंदिर, खान मार्केट पर इन्हें लगाया जाएगा।

सिरसा ने बताया कि दिल्ली में पूरे साल 1,000 वाटर स्प्रिंकलर, 140 एंटी-स्मॉग गन, 200 मैकेनिकल रोड स्वीपर, 70 इलेक्ट्रिक लिटर पिकर और 38 वॉटर टैंकर तैनात रहेंगे। जीपीएस, कैमरा सेंसर और सेंट्रल डैशबोर्ड से इनकी निगरानी होगी। 3000 वर्ग मीटर से बड़ी सभी कामर्शियल हाईराइज इमारतों जैसे मॉल्स और होटल की छतों पर एंटी-स्मॉग गन लगाने के निर्देश दिए गए हैं। सीएंडडी साइट्स की निगरानी के लिए एआई का उपयोग किया जा रहा है।

चाइल्ड हेल्पलाइन ने नाबालिग की शादी रुकवाई शादी

चित्रकूट। चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 की टीम ने सीतापुर के एक गांव में 14 वर्ष की बालिका का विवाह रुकवा दिया। प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर विशेष कुमार त्रिपाठी ने मामले की सूचना जिला प्रोबेशन अधिकारी प्रगति गुप्ता एवं बाल संरक्षण अधिकारी डॉ. सौरभ सिंह को दिया। जिला प्रोबेशन अधिकारी के नेतृत्व में चाइल्ड हेल्पलाइन की टीम से प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर, महिला सुपरवाइजर दीपा शुक्ला, सुपरवाइजर रामचंद्र एवं अवधलाल सीतापुर पुलिस चौकी के कांस्टेबल रविंद्र के साथ विवाह स्थल पर पहुंचे। काफी विरोध के बाद टीम ने पुलिस की मदद से बालिका को रेस्क्यू कर लिया। बालिका को बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष राकेश माथुर के समक्ष प्रस्तुत करने के बाद वन स्टॉप सेंटर में अग्रिम कार्रवाई तक के लिए रोका गया है।

बंग्लादेशी घुसपैठिये की दोहरी पहचान पर बवाल, भाजपा और तृणमूल में तकरार

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में एक इमिग्रेशन पॉइंट पर एक बांग्लादेशी नागरिक को उस समय गिरफ्तार किया गया जब वह भारतीय पहचान पत्र का उपयोग करके देश में प्रवेश करने का प्रयास कर रहा था। गिरफ्तार व्यक्ति सलीम शेख (31) मुर्शिदाबाद का रहने वाला है, जिसके पास दोहरी पहचान पाई गई। पुलिस सूत्रों ने बताया कि मालदा के महदीपुर इमिग्रेशन पॉइंट पर जांच के दौरान उसके पास से एक बांग्लादेशी पहचान पत्र जब्त किया गया। कार्ड पर उसका नाम मोहम्मद दिलवर (30) राजशाही का बताया गया है। आगे की जांच में पता चला कि वह स्थानीय निवासी होने का दिखावा करने के लिए भारतीय पहचान पत्र का इस्तेमाल कर रहा था। पुलिस ने उसके पास से आधार कार्ड, वोटर कार्ड, पासपोर्ट, वीजा और कुछ भारतीय मुद्रा भी बरामद की।

इंग्लिश बाजार पुलिस ने शेख को हिरासत में लेकर मालदा जिला न्यायालय में पेश किया। न्यायालय ने उसे छह दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी प्रदीप कुमार यादव ने बताया कि घटना की जांच शुरू कर दी गई है। इस घटना से राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है, भाजपा ने सत्तारूढ़ तृणमूल सरकार पर अवैध घुसपैठ को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है। दक्षिण मालदा जिले के भाजपा अध्यक्ष अजय गांगुली ने आरोप लगाया कि सीमावर्ती जिलों में फर्जी मतदाता सक्रिय हैं और चुनावी गड़बड़ियों में शामिल हैं।

आज न तो थल परिवहन सुरक्षित है न ही नभ परिवहन

भारत सरकार के परिवहन सम्बन्धी सभी मंत्रालय अपने अपने क्षेत्रों में उठाये गये कदमों को परिवहन क्रांति के रूप में प्रचारित करते हैं। सड़क, रेल, जलमार्ग, और हवाई यातायात आदि का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें सरकार अपनी पीठ थपथपाने से बाज आती हो। कभी रेल नेटवर्क के आधुनिकीकरण की बातें होती हैं तो कभी जलमार्ग और हवाई यातायात नेटवर्क को बढ़ाने के लिए नई नीतियां बनाये जाने की खबरें प्रकाश में आती हैं। हवाई क्षेत्र में भारत को दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते विमानन बाजारों में से एक माना जा रहा है। वैश्विक स्तर पर भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के मकसद से सरकार द्वारा राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति के अंतर्गत लॉजिस्टिक्स लागत को 16% से घटाकर 2025 तक 9% करने का लक्ष्य भी रखा गया है। सरकार द्वारा इन उपलब्धियों को पी आई बी इण्डिया में इंफ्रास्ट्रक्चर क्रांति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। तो क्या सरकार ऐसे प्रचार की आड़ में वास्तविक चुनौतियों को छुपाने व जनसाधारण से जुड़ी अनेक समस्याओं व सुरक्षा चुनौतियों पर पर्दा डालने का काम करती है ?

यदि हम सड़क दुर्घटनाओं में मरने वालों की संख्या की ही बात करें तो यह औसतन लगभग 1.5 लाख प्रतिवर्ष है। जहाँ तक निर्माण की गुणवत्ता का प्रश्न है तो यह किसी से छुपा नहीं है। घटिया व कमजोर सड़क निर्माण को लेकर तो पूरे विश्व में गोया भारत का डंकाबजता है। सड़कों पर गड्ढे,उद्घाटन से पहले या उद्घाटन के कुछ ही समय बाद देश में कहीं सड़क टूट रही है तो कहीं बड़े बड़े पुल धराशायी हो जाते हैं। जबकि परियोजनाओं में देरी और लागत बढ़ने की शिकायतें भी सामने आती रहती हैं। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन सेवाओं की गुणवत्ता और पहुंच अभी भी जरूरत के अनुसार नहीं है। सरकार निश्चित रूप से परिवहन क्षेत्र में प्रगति की बात करती है और इसे अपनी उपलब्धि के रूप में विज्ञापनों व मंत्रियों अथवा पार्टी नेताओं के आलेखों के माध्यम से पेश करती है, लेकिन यह पीठ थपथपाना पूरी तरह से संतुलित नहीं हो सकता। प्रगति तो हुई है, पर कई क्षेत्रों में अभी भी काफी सुधार की आवश्यकता है खास तौर पर सड़क यात्रियों की सुरक्षा को लेकर। सड़कों पर खुले आम घूमते आवारा पशु और गड्ढेदार सड़कें मौत को दावत देती हैं। बेशक सरकार की नीतियां और निवेश के चलते परिवहन क्षेत्र में बड़ा बदलाव आया है, लेकिन भ्रष्टाचार से डूबा निर्माण और इसी के परिणाम स्वरूप सड़क परिवहन में असुरक्षा जैसी चुनौती भी बनी हुई हैं।

केवल सड़क मार्ग ही नहीं बल्कि रेल मार्ग परिवहन व्यवस्था में भी यात्रियों की सुरक्षा की कोई गारंटी दिखाई नहीं देती। अभी कुछ दिन पहले ही 9 जून 2025 को मुंबई के ठाणे में मुंब्रा और दीवा रेलवे स्टेशनों के बीच एक लोकल ट्रेन में अत्यधिक भीड़ होने के कारण कई यात्री ट्रेन के दरवाजों पर लटक कर यात्रा कर रहे थे। वैसे भी लोकल ट्रेन यात्रा का यह आम दृश्य है। इस दौरान, कुछ यात्रियों के पीठ पर लटके बैग दूसरी दिशा से आ रही एक अन्य ट्रेन से टकराए, जिसके कारण कई यात्री ट्रेन से गिर गए। इस हादसे में 5 यात्रियों की मौके पर ही मृत्यु हो गई जबकि 4 अन्य यात्री गंभीर रूप से घायल हुए। खबरों के अनुसार रेलवे बोर्ड ने इस हादसे के बाद मुंबई की सभी लोकल ट्रेनों में ऑटोमैटिक डोर क्लोजर सिस्टम लगाने का फैसला किया ताकि भविष्य में यात्रियों का दरवाजों पर लटकना रोका जा सके। सवाल यह है कि क्या हादसों के बाद ही सरकार को ऐसे सुरक्षा उपाय करने की चेतना जागृत होती है ? इसी तरह 22 जनवरी 2025 को महाराष्ट्र के जलगांव जिले में परधाडे गाँव के पास माहेजी रेलवे स्टेशन पर लखनऊ से मुंबई जा रही पुष्पक एक्सप्रेस में ट्रेन में आग लगने की अफवाह के कारण एक दुखद हादसा हुआ। यह अफवाह इतनी तेजी से फैली कि यात्रियों में दहशत मच गई, और कई यात्री चलती ट्रेन से कूद गए।

दुर्भाग्यवश, उसी समय साथ के दूसरे ट्रैक से कर्नाटक एक्सप्रेस तेज गति से गुजर रही थी, जिसने पटरियों पर कूदे हुए यात्रियों को कुचल दिया। इस हादसे में 14 यात्रियों के मरने की खबर आई थी। इसी तरह 2023 में ओडिशा के बालासोर में हुए हादसे में 290 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई थी। आये दिन होने वाले ऐसे अनेक ट्रेन हादसे रेलवे की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़ा करते हैं।

यह तो रही थलीय परिवहन की बातें। इसी तरह नभ परिवहन अर्थात हवाई यातायात के क्षेत्र में भी यात्रियों की सुरक्षा को लेकर बेहद चिंताजनक स्थिति के दृश्य पिछले दिनों देखने को मिले। सबसे दर्दनाक हादसा 12 जून 2025 को गुजरात के अहमदाबाद में हुआ। यहाँ एयर इंडिया की फ़्लाइट एआई-171 का बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान जो अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से लंदन के गैटविक हवाई अड्डे के लिए उड़ान भर रहा था, टेकऑफ के कुछ ही सेकेंडों बाद क्रैश हो गया। इसे भारतीय विमानन इतिहास के सबसे भयावह हादसों में से एक माना जा रहा है। इस में 230 यात्री और 12 चालक दल के सदस्यों सहित कुल 242 लोग सवार थे। जिनमें एक यात्री के अतिरिक्त शेष सभी की मौत हो गई। चूँकि यह विमान हवाई अड्डे के साथ लगते बीजे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल पर जा गिरा इस वजह से कॉलेज की इमारत का भी काफी बड़ा हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। यहाँ भी कम से कम 5 एमबीबीएस छात्र, एक पीजी रेजिडेंट डॉक्टर, और एक सुपरस्पेशलिस्ट डॉक्टर की पत्नी की मृत्यु हुई। इसके अलावा 60 से अधिक मेडिकल छात्र घायल भी हुए। अभी यह खबर चर्चा में ही थी कि 15 जून 2025 को उत्तराखंड के केदारनाथ धाम के पास गौरीकुंड क्षेत्र में एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना भी हो गयी। इसमें पायलट सहित सात लोगों की मृत्यु हो गई। आर्यन एविएशन कंपनी का यह हेलीकॉप्टर केदारनाथ मंदिर से श्रद्धालुओं को लेकर गुप्तकाशी बेस की तरफ वापस आ रहा था। प्रारंभिक जांच में खराब मौसम और कम दृश्यता को हादसे का प्रमुख कारण माना जा रहा है। यह एक 7-सीटर बेल हेलीकॉप्टर था जिसे अहमदाबाद,गुजरात की एरोटांस सर्विस प्राइवेट लिमिटेड कंपनी संचालित कर रही थी। इस हेलीकॉप्टर दुर्घटना ने श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों में भय पैदा किया है, और हेलीकॉप्टर सेवाओं पर लोगों का भरोसा कम हुआ है। कहने को तो हवाई यातायात सबसे सुरक्षित परिवहन सेवाओं में माने जाते हैं परन्तु हाल के दिनों में हुये हादसे इन धारणाओं पर सवाल खड़ा करते हैं। लिहाजा कहना गलत नहीं होगा कि सरकार द्वारा लाख परिवहन क्रांति के दावे क्यों न किये जा रहे हों परन्तु हकीकत तो यही है कि आज न तो थल परिवहन सुरक्षित है न ही नभ परिवहन।

योग शरीर और मन की विकृतियों को दूर कर व्यक्ति को ऊर्जावान बनाता है

आज सुख की खोज में है। दुनिया में अगर शांति स्थापित करना है और संपूर्ण मानवता को आरोग्य प्रदान करना है तो योग को अपनाना होगा। योग भारत की प्राचीन विद्या है। योग अनादि है। भारत के ऋषि मुनि व तपस्वियों ने मानव जाति के कल्याण के लिए योग को आवश्यक माना है। संयोगो योग इत्युक्तो जीवात्मपरमात्मने। अर्थात जीवात्मा का परमात्मा का मेल ही योग है। योग साधना द्वारा ही दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है। योगधर्म जगत का एक मात्र पथ है। विश्वगुरू भारत पूरी दुनिया को योग के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रहा है।

भारत में हजारों वर्ष पूर्व से ऋग्वेद जैसा अकूत ज्ञान का भंडार और योग और आयुर्वेद जैसी प्राचीन विधा विद्यमान थी। अंग्रेजों के भारत में आने से पूर्व यहां की शिक्षा उत्तम थी। गांव-गांव गुरुकुल चलते थे। गुरुकुल में योग और आयुर्वेद के साथ-साथ 64 कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। गुरू का जीवन भी आदर्श चरित्रवान व तपस्वी होता था। बालकों को कठोर परिश्रम करना पड़ता था। गुरू सेवा, गौ सेवा, अतिथि सेवा करते–करते सेवा, श्रम, संयम, पवित्रता, आज्ञापालन आदि बातें स्वतः आ जाती थी। वे शरीर व मन से बलवान, निर्भय एवं चरित्र और आत्मबल संपन्न होकर निकलते थे। उनकी बुद्धि भी प्रखर व निर्मल हो जाती थी। शास्त्रों का ज्ञान भी हो जाता था। ओजस्वी एवं तेजस्वी होकर ही ग्रस्थाश्रम में प्रवेश करते थे। वे संयम व सदाचार का पालन करते थे।

यही कारण था कि योग, आयुर्वेद, घुड़सवारी, व अस्त्र शस्त्रों के संचालन के अलावा युद्ध कौशल की बारीकियों से आम जनमानस भली भांति परिचित था।

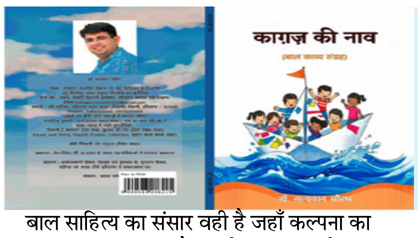
अंग्रेजों को लगा कि ऐसे बात बनने वाली नहीं है। अंग्रेजों ने भारत की शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था को नष्ट किया। यहां की परंपरा, संस्कृत व संस्कृति के प्रति अनास्था पैदा करने की चेष्टा की गयी। कुछ हद तक वह इसमें सफल भी रहे। लेकिन भारत की जनता को वह अपनी संस्कृति और संस्कारों से पूर्णतया काट नहीं सके। दुर्भाग्य से भारत जब आजाद हुआ तो देश की सत्ता ऐसे लोगों के हाथ में गई जो विदेशी संस्कृति में पले बढ़े थे। उन्हें भारत की गौरवशाली परंपरा का ज्ञान नहीं था। इसलिए उन्होंने भारत को पश्चिमी राष्ट्रों की तरह विकसित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने भारत के ज्ञान विज्ञान योग आयुर्वेद और संस्कृति परंपरा की उपेक्षा की। इसका दंश आज भी भारत झेल रहा है। लेकिन भारत को आजादी मिलने के बाद योग व आयुर्वेद को सरकार ने भले उपेक्षा की हो लेकिन देश के संत महात्माओं ने योग को विश्वव्यापी बनाया। अंग्रेजी मानसिकता में पले बढ़े लोगों ने ना तो योग को विज्ञान माना और ना ही स्वस्थ रहने का बेहतरीन तरीका। लिहाजा योग पर ना तो कोई संस्थागत कार्य हुआ और ना ही इसकी जन स्वीकार्यता हुई। योग गुरू बाबा रामदेव ने योग को विश्वव्यापी बनाया। बाबा रामदेव ने योग से आमजन को जोड़ने का काम किया।

गीता में कहा गया है योगः कर्मसु कौशलम। योग का अर्थ होता है जोड़ना। नर का नारायण के साथ एक हो जाने के लिए सनातनधर्म में जो साधन या साधन सामग्री बतलायी है उसी का नाम है योग। नर से नारायण बनने की साक्षात विधि योग है। योग स्वस्थ जीवन जीने की कला है। योग शरीर मन बुद्धि के मध्य सामंजस्य स्थापित करता है। योग में अपार शक्ति निहित है। योग से शरीर सर्वसमर्थ हो सकता है। योग के बल पर दुनिया में सब कुछ हासिल किया जा सकता है। यहां तक कि अनेक सिद्धियां भी योग के द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं। नियमित योगाभ्यास से सामान्य व्यक्ति भी 100 साल तक स्वस्थ जीवन जी सकता है। लेकिन केवल शारीरिक अभ्यास ही योग नहीं है। योग में आहार,विहार के साथ-साथ यम, नियम, आसन, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि भी जरूरी है। इन सब के साथ जो सबसे महत्वपूर्ण है योगासन के साथ ब्रह्मचर्य का पालन। योग के साथ। ब्रह्मचर्य का पालन नहीं किया तो सब बेकार है। आप को कोई सिद्धि नहीं मिलेगी। न शारीरिक न मानसिक न आध्यात्मिक। वर्तमान में शारीरिक अभ्यास को ही योग मान लेते हैं। वीर्य रक्षा परम उपयोगी है। ब्रह्मचर्य से बल, बुद्धि, तेज एवं आयु की वृद्धि, आरोग्य एवं सुख शान्ति मिलती है। वीर्य रक्षा ही जीवन है और वीर्यका नाश ही मृत्यु है। वीर्यहीन पुरुष संसार में कुछ भी नहीं कर सकता। शरीर की सात धातुओं में वीर्य ही सर्वोपरि है। वीर्य ही जीवन का सार है। वीर्य का अपव्यय करने वाला मनुष्य कभी स्वस्थ एवं सुखी नहीं रह सकता। वीर्य की मात्रा कम हो जाने पर शरीर की सारी क्रियाएँ अस्त-व्यस्त हो जाती हैं मस्तिष्क कमजोर हो जाता है, स्मृति शक्ति क्षीण हो जाती है, स्नायु निर्बल हो जाते हैं, रक्तका संचार कम हो जाता है, इन्द्रियों शिथिल हो जाती हैं। अखाड़ों में पहलवानी करने वाले ब्रह्मचर्य तथा दुग्ध-सेवन पर अधिक जोर देते हैं। आजकल शहरों में जिम जाने का चलन बढ़ रहा है लेकिन वहां पर केवल व्यायाम पर ही फोकस दिया जाता है। ब्रह्मचर्य के पालन की सीख नहीं दी जाती है। ऐसे में अगर ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करेंगे तो शारीरिक श्रम करने का कोई लाभ नहीं है। ब्रह्मचर्य के बिना मन की एकाग्रता भी सम्भव नहीं है। ब्रह्मचर्य के बिना मनुष्य के न तो लौकिक कार्य सुचारु रूप से सिद्ध होते हैं और न वह परमार्थ में ही अग्रसर हो सकता है। तंत्र साधना, भक्ति मार्ग और ज्ञान प्राप्ति में भी ब्रह्मचर्य को आवश्यक माना गया है। आजकल युवा असमय नपुंशकता के शिकार हो रहे हैं। संतान उत्पन्न करने की क्षमता नष्ट हो रही है। यदि संतान होती भी है तो वह दुर्बल, क्षीणकार्य, रोगग्रस्त व अल्पायु होती है। युवा ही हमारे राष्ट्र के आधारस्तम्भ हैं। इसलिए समस्त समस्याओं का समाधान योग में है। योग भारत के ऋषि महर्षि की और से दुनिया को अनुपम देन है। योग व आयुर्वेद के माध्यम से हम दुनिया को मार्ग दिखा सकते हैं। आज पूरी दुनिया योग के प्रति तेजी से आकर्षित हो रही है। इसका श्रेय योग गुरु बाबा रामदेव को जाता है। उन्होंने योग व आयुर्वेद का परिचय पूरे विश्व में लहराया। आज हम गर्व के साथ दुनिया के सामने सर उठाकर कह सकते हैं कि योग भारत से दुनिया भर में गया।

वैसे योग की उत्पत्ति भारत में हजारों वर्ष पूर्व हुई थी। भगवान शिव को आदियोगी कहा जाता है। भगवान शिव ने योग को सप्त ऋषि को प्रदान किया। सप्त ऋषियों द्वारा योग आगे बढ़ा। भगवद गीता के अनुसार, भगवान कृष्ण ने योग का ज्ञान सबसे पहले सूर्य को दिया था, और सूर्य ने यह ज्ञान मनु को दिया, और मनु ने इक्ष्वाकु को। इस प्रकार, योग का ज्ञान सूर्य से होते हुए मनु और फिर इक्ष्वाकु तक पहुंचा। इसके बाद महर्षि पतंजलि ने योग सूत्र की रचना की। हमारे वेद उपनिषद स्मृतियों वह पुराणों में योग से संबंधित अपार ज्ञान भरा है।

योग के महत्व से आज पूरी दुनिया परिचित हो गई है। मानव को शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत करने का काम योग करता है। अगर व्यक्ति नियमित योग करता है तो रक्तचाप, तनाव व मधुमेह जैसी जीवन शैली पर आधारित बीमारियों से बच सकता है। नियमित योगाभ्यास से शरीर में श्वेत रक्त कणिकाओं की वृद्धि होती है। इसके कारण रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। इस भागदौड़ की जिंदगी में जरूरी है कि हम योग से जुड़ें और इसे अपने और अपने परिजनों की दिनचर्या में शामिल कराएं। तभी सुखी और समृद्ध परिवार की कल्पना की जा सकती है। आजकल फेसयोग काफी चलन में है। योग शरीर और मन की विकृतियों को दूर कर व्यक्ति को ऊर्जावान बनाता है। उसकी प्राण ऊर्जा को प्रबल करता है जिससे या तो बीमारियां पनपती नहीं है और अगर होती भी है तो शरीर में टिक नहीं पाती। योग द्वारा आरोग्य और दीर्घायु दोनों को प्राप्त किया जा सकता है।

‘कागज की नाव’ : मासूमियत, कल्पना और संवेदना का सागर



‘कागज की नाव’ एक सजीव और संवेदनशील बाल काव्य संग्रह है जो बच्चों की सरल और मासूम दुनिया को खूबसूरती से अभिव्यक्त करता है। डॉ. सत्यवान सौरभ की लेखनी में भाषा की सहजता, भावों की गहराई और लय की मिठास स्पष्ट झलकती है। प्रत्येक कविता बच्चों की जिज्ञासा और कल्पनाशीलता को बढ़ावा देती है, साथ ही उनमें नैतिक मूल्यों का संचार भी करती है। यह संग्रह न केवल बाल पाठकों के लिए उपयुक्त है, बल्कि अभिभावकों और शिक्षकों के लिए भी एक उपयोगी संसाधन है जो बच्चों को सही दिशा देना चाहते हैं।कुल मिलाकर, ‘कागज की नाव’ बाल साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान है, जो बच्चों के मनोविज्ञान और भावनाओं के साथ संवेदनशीलता से जुड़ता है।

बाल साहित्य का संसार वही है जहाँ कल्पना का पंख बच्चा खुद लगाता है, शब्दों की छुअन से वह उड़ता है, और भावों की कश्ती में बैठकर वह जीवन के पहले पाठ पढ़ता है। डॉ. सत्यवान सौरभ का बाल काव्य संग्रह ₹कागज की नाव₹ इसी कल्पनाशील, संवेदनशील और बाल-मन की दुनिया का अद्भुत दस्तावेज है। यह संग्रह न केवल बच्चों के लिए है, बल्कि उनके भीतर के 'देखने वाले', 'सोचने वाले', और 'महसूस करने वाले' मन की गहराई तक पहुँचता है। 80 से अधिक कविताओं के इस संग्रह में जीवन, प्रकृति, विज्ञान, तकनीक, नैतिकता और बाल जिज्ञासा जैसे सभी आयाम समाहित हैं। ‘कागज की नाव’ केवल एक कविता संग्रह नहीं, एक सांस्कृतिक बीज है, जिसे डॉ. सत्यवान सौरभ ने अपने संवेदनशील लेखन, बाल-अनुभव और विचारशीलता से सींचा है। यह संग्रह नवीन पीढ़ी के बच्चों के लिए एक आइना है, जिसमें वे खुद को देख सकते हैं, और साथ ही एक दिशा सूचक भी है, जो उन्हें जीवन मूल्यों की ओर ले जाता है। यह संग्रह, डॉ. सौरभ के बाल साहित्य में तीसरे प्रयास के रूप में प्रकाशित हुआ है। इससे पहले उनका पहला बाल कविता संग्रह ‘प्रज्ञान’ वर्ष 2023 में, और दूसरा ‘बाल प्रज्ञान’ वर्ष 2024 में प्रकाशित हो चुका है। यह त्रयी अब बाल साहित्य के क्षेत्र में उनकी एक मजबूत पहचान के रूप में स्थापित हो चुकी है। यह संग्रह शिक्षकों, अभिभावकों और बाल-साहित्य प्रेमियों के लिए एक अनिवार्य पाठ है।

संग्रह का नाम और शीर्षक कविता: ‘कागज की नाव’

‘कागज की नाव’ शीर्षक कविता बचपन की उस पहली कल्पना को पुनर्जीवित करती है जहाँ कागज की एक नाव बारिश के पानी में तैरती है और साथ में बहता है हृदय का उल्लास:

‘वर्षा-जल में चलो नहाएं,
कागज वाली नाव चलाएं।
देखें जीत कौन है पाता,
नाव बहा आगे ले जाता॥’

यह कविता केवल एक दृश्य नहीं, बल्कि एक स्मृति है, एक अहसास है जो बालमन को सीधे स्पर्श करता है।

कल्पना और प्रेरणा का संगम: ‘सपनों के पर’, ‘रंग-बिरंगे सपने’, ‘नन्ही मुस्कान’ ‘सपनों के पर’ में कवि बच्चों को उड़ने के लिए प्रेरित करते हैं—सपनों से पर निकलने का मंत्र देते हैं। ‘रंग-बिरंगे सपने’ एक सुंदर कविता है जो कल्पनाओं को रंगों से भर देती है:

‘नीला हो आकाश जैसा,
पीला सूरज के पास जैसा।
हर सपना रंगों से बोले,
बचपन हर रंग में डोले॥’

बाल भावनाओं का संगीत: ‘नन्हे कदम, बड़े सपने’, ‘बचपन की गुनगुनाहट’, ‘खेल की दुनिया’ ‘नन्हे कदम, बड़े सपने’ कविता बताती है कि कैसे बच्चे छोटे होते हुए भी बड़े सपने देखते हैं। ‘खेल की दुनिया’ में खेलों के माध्यम से सीखने का संदेश है।

प्रकृति और विज्ञान के मेल का सुंदर चित्रण

इस संग्रह में तकनीक और पर्यावरण जैसे समकालीन विषयों को बेहद सरलता से जोड़ा गया है: ‘टैबलेट मेरा दोस्त’, ‘रोबोट दोस्त’, ‘ई-किताब का जादू’, ‘कृत्रिम बुद्धिमत्ता (अक) की कहानी’, ‘ग्रीन सिटी का सपना’, ‘मैं हूँ पर्यावरण प्रहरी’, ‘प्लास्टिक मुक्ति अभियान’ उदाहरण:

‘रोबोट मेरा साथ निभाए,
होमवर्क में मदद बनाए।
फिर भी मम्मी कहती हैं,
किताबों से रिश्ता बनाए॥’

यहां स्पष्ट है कि तकनीक को संतुलित दृष्टिकोण से देखने की सीख दी गई है।

नैतिक और सामाजिक शिक्षा की कविताएं

‘बेटियाँ भी उड़ान भरें’, ₹सच्चा परिवार₹, ₹हम बच्चे हिन्दुस्तान के₹, ₹स्वस्थ खानपान की ताकत₹, ₹ट्रैफिक नियमों का पालन₹ इन कविताओं में बच्चों को व्यवहारिक जीवन से जोड़ते हुए समाज के प्रति जिम्मेदारी का बोध कराया गया है।

भाषा और शैली डॉ. सत्यवान सौरभ की भाषा अत्यंत सरल, लयबद्ध और बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप है। उनकी कविताओं में छंद, तुक, और छोटे-छोटे बिंब बच्चों की भाषा को छूते हैं। उदाहरण के लिए:

‘चाँदनी रात में हम गाएं,
चंदा मामा संग मुस्काएं।
तारों संग बात करेंगे,
सपनों में फिर रात भरेंगे॥’

पुस्तक की विशेषताएं विविध विषयों पर कविताएं, बालकों की जिज्ञासा और कल्पना को उभारती रचनाएँ, प्रकृति, तकनीक, विज्ञान, समाज, मूल्य आधारित शिक्षा का सुंदर समावेश, मनोवैज्ञानिक रूप से परिपक्व एवं साहित्यिक दृष्टि से संतुलित, सुगम भाषा, उच्च बालानुकूल बिंब में ₹कागज की नाव₹ केवल एक कविता संग्रह नहीं, एक सांस्कृतिक बीज है, जिसे डॉ. सत्यवान सौरभ ने अपने संवेदनशील लेखन, बाल-अनुभव और विचारशीलता से सींचा है। यह संग्रह नवीन पीढ़ी के बच्चों के लिए एक आइना है, जिसमें वे खुद को देख सकते हैं, और साथ ही एक दिशा सूचक भी है, जो उन्हें जीवन मूल्यों की ओर ले जाता है। यह संग्रह शिक्षकों, अभिभावकों और बाल-साहित्य प्रेमियों के लिए एक अनिवार्य पाठ है।

पुस्तक परिचय: कागज की नाव
लेखक: डॉ. सत्यवान सौरभ बाल काव्य संग्रह
मूल्य: ₹175 प्रकाशन वर्ष: 2025
पृष्ठ: 120 प्रकाशक:नोशन प्रेस, चेन्नई
उपलब्धता: अमेजन एवं फ्लिपकार्ट पर उपलब्ध



समीक्षक: विजय गर्ग

प्रेम, पीड़ा और प्रश्नों की गाथा: 'राज सर आईपीएस'

प्रेम की सबसे सच्ची परीक्षा तब होती है जब वह समय, समाज और सत्ता की सख्त दीवारों से टकराता है। ह्यराज सर आईपीएसह्ल केवल एक प्रेम कथा नहीं, बल्कि एक उच्च शिक्षित, भावुक और समर्पित युगल की ऐसी आत्मकथा है, जिसमें प्रेम के बीज अंकुरित होते हैं, पनपते हैं, एक पवित्र रिश्ते में बदलते हैं और अंततः एक क्रूर व्यवस्था के नीचे कुचल दिए जाते हैं। यह कहानी प्रोफेसर (डॉ.) मंजू वर्मा और आईपीएस अधिकारी राजीव वर्मा के निश्छल प्रेम और अल्पकालिक वैवाहिक जीवन के दुखद अंत की दस्तावेजी व्याख्या है , जो पाठकों की आत्मा को झकझोर देती है।

प्रेम का अंकुरण और उत्कर्ष- कहानी का आरंभ होता है पंजाब विश्वविद्यालय के उन खुले, बौद्धिक और जीवन से भरपूर गलियारों से, जहां 19 वर्षीय मंजू चौधरी, इतिहास की छात्रा के रूप में प्रवेश करती हैं और 21 वर्षीय शोधार्थी राजीव वर्मा के साथ उनकी मुलाकात होती है। यह मुलाकात केवल संयोग नहीं थी, बल्कि दो आत्माओं के गहरे जुड़ाव की प्रस्तावना थी। लेखिका ने प्रेम की उस पहली चिंगारी को इतनी कोमलता और गरिमा से प्रस्तुत किया है कि पाठक जैसे उस पल का साक्षी बन जाता है।

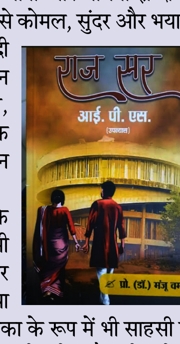
उनका प्रेम न तो भावुकता की अतिशयोक्ति है और न ही आधुनिक 'डेटिंग संस्कृति' का छायाचित्र। यह प्रेम है झ संजीदा, गहन, विचारशील और जीवन की वास्तविकताओं से टकराता हुआ। वेदना, बेचैनी, समर्पण और अंतहीन चाहना झ इन चारों भावों की सघन अनुभूति को लेखिका ने इतनी सादगी से शब्दों में पिरोया है कि वे दिल की तहों को भिगो देते हैं।

विवाह और संघर्ष- प्रेम विवाह में परिणत होता है। राजीव वर्मा का आईपीएस में चयन होता है झ यह क्षण गौरव का तो है, पर नियति यहीं से उलटी चाल चलना शुरू कर देती है। उत्तर प्रदेश कैडर मिलना, पोस्टिंग की जटिलताएं, और फिर एक दिन अचानक एक रहस्यमयी सुबह... जब सब कुछ खत्म हो जाता है। यहाँ लेखिका की लेखन शैली न केवल साहित्यिक सौंदर्य का नमूना बनती है, बल्कि भावनात्मक ईमानदारी का चरम भी दिखाती है। प्रेमी-पति के यूँ अचानक चले जाने के बाद की अनुभूतियों को उन्होंने आँसुओं से नहीं, शब्दों से तराशा है झ शब्द जो चुभते हैं, रुलाते हैं, और पाठक को किसी नाटक के दर्शक नहीं, एक हिस्सा बना देते हैं।

नियति की क्रूरता और व्यवस्था की चुप्पी- राजीव वर्मा की मृत्यु मात्र एक व्यक्तिगत क्षति नहीं थी। एक होनहार आईपीएस अधिकारी, एक समर्पित पति, और दो छोटे बच्चों के पिता की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मृत्यु पर सरकार और प्रशासन की खामोशी अपने आप में एक प्रश्नचिह्न है। लेखिका इस भाग को बहुत संक्षेप में छूती हैं झ शायद यह उनके जीवन का सबसे कठिन हिस्सा था, शायद मां होने का दायित्व उस क्षण लेखिका के अंदर की जिज्ञासु इतिहासकार को शांत रहने के लिए विवश कर गया। यही इस आत्मकथा की सबसे बड़ी विडंबना है झ जहाँ शुरूआत से लेकर विवाह तक घटनाएं विस्तार से, गहराई से और भावुकता से प्रस्तुत हैं, वहीं घटना की जांच, साजिश की संभावनाएं, और उसके बाद की न्यायिक प्रक्रिया बहुत सतही तौर पर दर्ज की गई हैं। यह अधूरापन खटकता है, और पाठक के मन में एक टीस छोड़ जाता है।

अधूरा अंत और संभावित दूसरा भाग- ‘राज सर आईपीएस’ का समापन जितना भावुक है, उतना ही अधूरा भी लगता है। पाठक के मन में कई प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं झ क्या यह केवल एक दुर्घटना थी? क्या इसमें किसी प्रशासनिक या राजनीतिक साजिश की भूमिका थी? क्या कोई न्यायिक प्रक्रिया चली? मंजू वर्मा ने कैसे जीवन के उस अंधकारमय दौर को जिया? उनके दो छोटे बच्चों का भविष्य कैसे आकार लिया? इन प्रश्नों का उत्तर उपन्यास के पहले भाग में नहीं मिलता। ऐसे में आवश्यकता महसूस होती है एक दूसरे खंड की, जो इस कहानी को न्यायपूर्ण निष्कर्ष तक पहुँचाए झ जहाँ न केवल प्रेम की पीड़ा का दस्तावेज हो, बल्कि न्याय और संघर्ष का भी।

लेखन शैली और साहित्यिक गरिमा- प्रोफेसर मंजू वर्मा का लेखन भाषा और भावना झ दोनों में संतुलन का उदाहरण है। नाटकीयता से बचते हुए उन्होंने अपने जीवन के सबसे कोमल, सुंदर और भयानक पलों को जिस संयम, गरिमा और साहस से शब्दों में ढाला है, वह उन्हें हिंदी साहित्य की आत्मकथात्मक परंपरा में एक विशिष्ट स्थान दिलाता है। उनके वर्णन में नारी मन की गहराई है, एक पत्नी का समर्पण है, एक प्रेमिका की तड़प है, और एक मां की चुप्पी भी। उपन्यास का सबसे बड़ा बल यही है झ वह पाठक को पाठक नहीं रहने देता, बल्कि उसे एक गवाह, एक सहभागी और एक मौन मित्र बना देता है।



‘राज सर आईपीएस’ एक ऐसी साहित्यिक कृति है, जो भावुक पाठकों के लिए केवल एक प्रेम कथा नहीं, बल्कि एक भावनात्मक यात्रा है। यह उन सभी लोगों की प्रतिनिधि कहानी है, जिन्होंने जीवन में प्रेम किया, उसे खोया, और फिर समाज की चुप्पी के साथ जीना सीखा। यह उपन्यास एक स्त्री की संघर्षगाथा भी है - जो प्रेम में ईमानदार रही, पत्नी के रूप में समर्पित रही और एक लेखिका के रूप में भी साहसी बनी रही। प्रोफेसर मंजू वर्मा की यह आत्मकथा हिंदी साहित्य को एक अनमोल दस्तावेज देती है , जो न केवल पढ़ा जाना चाहिए, बल्कि अनुभव किया जाना चाहिए।

पुस्तक प्राप्ति हेतु सूचना- पुस्तक का नामः राज सर आईपीएस
लेखिकाः प्रोफेसर (डॉ.) मंजू वर्मा मूल्यः ₹500 मात्र
पुस्तक प्राप्त करने के इच्छुक पाठकगण कृपया प्रोफेसर मंजू वर्मा से सीधे संपर्क करें।
संपर्क करेंः 7986822702



प्रस्तुति -प्रियंका सौरभ

अपर निदेशक ने किया पशु चिकित्सालय का निरीक्षण

बनकटी, बस्ती। अपर निदेशक पशुपालन डॉ. जीवनलाल ने बुधवार को राजकीय पशु चिकित्सालय बनकटी का निरीक्षण किया। पशु अस्पताल में गंदगी देख वे बिफर पड़े। तत्काल अस्पताल में साफ-सफाई के निर्देश दिये। उन्होंने अस्पताल के अभिलेखों की भी जांच की।

अपर निदेशक जीवन लाल ने ओपीडी कक्ष में बैठ कर सबसे पहले उपस्थिति पंजिका, वाह्य रोगी पंजिका, कृत्रिम गभार्धान पंजिका तथा टीकाकरण पंजिका की समीक्षा की। अस्पताल में मौजूद चिकित्साधिकारी ने बताया कि अब तक गला घोंटू टीका की 3300 डोज मिली है। 1000 डोज पशुओं को लगा दी गई है। अपर निदेशक ने शेष वैक्सीन अति शीघ्र पशुओं को लगाने की हिदायत दी।

उन्होंने बताया कि बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में टीम के माध्यम से पशुओं में गला घोंटू के टीकाकरण का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि जिले में पशु चिकित्सा अधिकारियों की कमी से शासन को अवगत कराया गया है। ट्रांसफर सीजन में यदि कोई पशु चिकित्साधिकारी का तबादला होता है तो उसे तैनात किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान वेटरनरी फार्मासिस्ट गणेशजी कुशवाहा, पशुधन प्रसार अधिकारी सुशील कुमार शुक्ल, पत्र वाहक विश्रामपाल व पवन यादव आदि उपस्थित रहे।

कंप्यूटर योजनान्तर्गत आवेदन की अंतिम तिथि 14जुलाई

गोरखपुर। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी श्रद्धा मिश्रा ने बताया कि पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा पिछड़ा वर्ग के बेरोजगार युवक एवं युवतियों हेतु संचालित ओ लेवल एवं ट्रिपल सी कंप्यूटर प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु निर्गत समय सारणी की सीमा अवधि को बढ़ा दिया गया है। इच्छुक अभ्यर्थियों द्वारा दिनांक 14 जून 2025 से 14 जुलाई 2025 तक ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है कंप्यूटर प्रशिक्षण योजना के पोर्टल http://obccomputertraining.upsdc.gov.in पर जाकर अभ्यर्थियों द्वारा निर्धारित प्रारूप पर ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। ओ लेवल तथा ट्रिपल सी कंप्यूटर प्रशिक्षण हेतु गरीबी रेखा के नीचे, जिनके अभिभावक की वार्षिक आय एक लाख रुपए से अधिक ना हो एवं जिनकी उम्र 35 वर्ष से अधिक न हो वाले आवेदक ही पात्र हैं। योजना हेतु अभ्यर्थी की न्यूनतम अर्हता इंटरमीडिएट होनी चाहिए एवं वह किसी भी संस्था से छात्रवृत्ति न प्राप्त कर रहा हो। उक्त अर्हता रखने वाले इच्छुक बेरोजगार युवक एवं युवतियों को उपरोक्त वेबसाइट पर निर्धारित तिथि तक ऑनलाइन आवेदन करने के उपरांत आवेदन पत्र समस्त संलग्नको सहित विकास भवन के कमरा नंबर 6 में जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी कार्यालय में दिनांक 14 जुलाई 2025 की सायं 5:00 बजे तक अनिवार्य रूप से जमा करना होगा।

मौत को पांच बार दिया मात



वाराणसी। जिले के जिला पंचायत अध्यक्ष राजू कनौजिया को वाराणसी स्थित उनके आवास पर सांप ने डस लिया। उनको उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल ले जाने के बाद उनकी सेहत में सुधार आया। वहीं डसने वाला सांप मर गया। इससे पहले भी चार बार जिला पंचायत अध्यक्ष को सांप डस चुका है। हर बार वह इससे बचकर बाहर निकल आए हैं। पिछले वर्ष भी उनको सर्प ने डसा था। डसने वाले पांच सांप में दो की मौत भी हो गई। जिला पंचायत अध्यक्ष राजू कनौजिया को बृहस्पतिवार की शाम को वाराणसी घर से बाहर निकलते समय नागिन ने डस लिया। उनको आनन-फानन अस्पताल ले जाया गया। जहां इलाज के बाद उनकी सेहत में सुधार आया। पिछले वर्ष जिला पंचायत आवास पर भी नागिन ने उनको डसा था। जिला पंचायत अध्यक्ष राजू कनौजिया ने बताया कि उनको पांचवी बार सांप ने डसा है। जनता के आशीर्वाद से अब वह पूरी तरह से सुरक्षित हैं।

उत्पादों के भौगोलिक संकेत (जीआई), संरक्षण एवं संवर्धन विषय कार्यशाला संपन्न

कानपुर। जीआई पंजीकरण के लिए किसी संस्था व संगठन की ओर से चेन्नई मुख्यालय में आवेदन किया जाता है। जहां किसी उत्पाद के विशिष्ट गुणों, भौगोलिक पहचान के आधार पर पंजीकरण हो जाता है। जीआई टैग किसी विशिष्ट क्षेत्र से जुड़े उत्पाद की विशिष्ट पहचान को संरक्षित करता है। यह बातें मुख्य अतिथि जीआई मैन के नाम से पहचाने जाने वाले सीएसए के पूर्व छात्र डॉ. रजनीकांत द्विवेदी ने कहीं। वह गुरुवार को विश्वविद्यालय की ओर से



उत्पादों के भौगोलिक संकेत (जीआई), संरक्षण एवं संवर्धन विषय पर आयोजित कार्यशाला में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि जीआई टैग से यह तय हो जाता है कि उपभोक्ताओं को असली उत्पाद मिलेगा। कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने वैज्ञानिकों से कहा कि जिले के विशिष्ट उत्पादों को चिह्नित कर उनका पंजीकरण कराएं। जीआई के पंजीकरण से लाभ केवल कृषकों को ही नहीं, बल्कि इससे जुड़े वैज्ञानिकों, व्यापारियों के साथ ही अनेक लोगों को भी होता है। कार्यक्रम के दौरान उपनिदेशक कृषि विपणन एवं विदेश व्यापार डॉ. सुग्रीव शुक्ला, प्रो. डॉ. पीके सिंह, डॉ. विजय कुमार यादव, डॉ. आरके यादव, डॉ. केशव आर्य, डॉ. वीके त्रिपाठी सहित अन्य वैज्ञानिक ममौजूद रहे।

प्रो. आशीष त्रिपाठी की दूसरी छात्रा पार्वती तिर्की आदिवासी हिंदी साहित्य में अकादमी युवा पुरस्कार से हुईं सम्मानित

वाराणसी। महामना की बगिया के दो युवा साहित्यकारों को इस बार एक साथ साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है। इनमें से एक बलिया निवासी डा. धीरज कुमार पांडेय कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के विभागाध्यक्ष हैं।

उनकी संस्कृत भाषा में लिखित आलोचनात्मक गद्य पुस्तक 'पारिभाषिक शब्द स्वारस्यम् को साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार के लिए चयन किया गया है तो दूसरी छात्रा झारखंड के गुमला जिले की निवासी डा. पार्वती तिर्की हैं जिन्हें उनके काव्य संग्रह ह्यफिर उगनाह्ल के लिए साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार-2025 दिए जाने की घोषणा की गई है। इन दो युवा साहित्यकारों की उपलब्धियों से काशी हिंदू विश्वविद्यालय परिसर में बुधवार को हर्ष का वातावरण रहा। बलिया जनपद के सहतवार अंतर्गत बलेउर गांव निवासी शिव कुमार पांडेय के पुत्र डा. धीरज कुमार ने 2014 में जेआरएफ प्राप्त किया था। वर्ष 2015 में श्रेष्ठ निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर विश्वविद्यालय ने उन्हें महामना संस्कृत अवार्ड से सम्मानित किया था।

उसी वर्ष स्नातकोत्तर परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर उनको विश्वविद्यालय का सर्वोच्च पुरस्कार चांसलर मेडल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों मिला था। डा. पांडेय ने कहा कि ग्रंथ लेखन करते समय लेखक को सावधान होकर कार्य करना चाहिए। जिसमें व्याकरणगत अशुद्धियां एवं सिद्धांत भंग ना हो





तथा पदलालित्य पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

आदिवासी हिंदी साहित्य में साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार पाने वाली डा. पार्वती तिर्की बीएचयू की दूसरी छात्रा हैं। बीएचयू के हिस्से में यह गौरवपूर्ण उपलब्धि 10 वर्षों के अंदर ही आई है। इनके पूर्व 2019 में बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' काव्य के लिए बीएचयू के ही पूर्व छात्र डा. अनुल लुगुन को साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार मिला था।

संयोग की बात यह कि ये दोनों आदिवासी युवा साहित्यकार प्रो. आशीष त्रिपाठी के शोध छात्र रहे हैं। प्रो. त्रिपाठी ने जागरण से बातचीत में बताया कि हिंदी के 100 वर्षों के इतिहास में पहली बार पिछले 15 वर्षों आदिवासी हिंदी कविता ने काफी महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।

उन्होंने बताया कि आदिवासी कविता की भावभूमि में आदिवासी जीवन संस्कृति का निश्छल स्वरूप परिलक्षित होता है। पहले ब्रिटिश साम्राज्य से संघर्ष, स्वतंत्रता के बाद भी अपने जल, जंगल, जमीन के लिए व्यवस्था से संघर्ष करने वाले आदिवासियों के जीवन में संघर्ष व निश्छलता झलकती है।

इसी जल, जंगल, जमीन से जड़ी उनकी संस्कृति, कथाओं, गीतों में रचती-बसती हैं। इन दोनों युवा साहित्यकारों ने इसी आदिवासी लोक को अपने साहित्य का केंद्रीय विषय बनाया है। डा. पार्वती तो इतनी विनम्र व मृदुभाषी थी कि कभी-कभी उससे संवाद करना भी कठिन हो जाता था। काफी अच्छा लिखती हैं वह, उनको पुरस्कार मिलने की बात सुनकर गौरवबोध हो रहा है।

डा. पार्वती तिर्की इन दिनों रांची के रामलखन सिंह यादव डिग्री कालेज में हिंदी की सहायक प्रोफेसर हैं। स्नातक से पीएचडी तक की पढ़ाई उनकी बीएचयू से हुई है। जागरण से बातचीत में उन्होंने बताया कि स्नातक करने के लिए वर्ष 2014 में ही बीएचयू आ गई थी। बीए के बाद, एमए और फिर पीएचडी किया। मेरा जन्म झारखंड के गुमला जनपद के तारागोट आबा टोली में हुआ है। बचपन से आदिवास संस्कृति को जिया व देखा है लेकिन वह जीवन में सांसों की तरह शामिल थी। इसलिए अलग से कोई दृष्टि नहीं गई। पीएचडी के दौरान जब झारखंड अपने कुड़ुक़ी समाज की बोली में गाए जाने वाले आदिवासी लोक गीतों पर शोध आरंभ किया तो 40-45 गांवों में भ्रमण की। तभी कविताओं की भावभूमि बनती चली गई। इसके पूर्व बचपन में कविताएं लिखती थी लेकिन तब विषय भिन्न थे।

मेरी कविताएं आदिवासी लोक से ही भावभूमि लेती हैं, शब्द हमें हिंदी ने दिए। बताया कि दोपहर ढाई बजे डा. उपासना त्रिपाठी से फोन द्वारा साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार के लिए मेरे हिंदी कविता-संग्रह फिर उगना के चयन की सूचना मिली तो प्रसन्नता हुई। फिर तो फोन काल्स आने का सिलसिला शुरू हो गया। उन्होंने बताया कि कभी यह सोचकर नहीं लिखा कि पुरस्कार मिलेगा, यह झारखंड के आदिवासी जीवन, बोली व संस्कृति का सम्मान है।



नदियों का जलस्तर बढ़ा, ग्रामीणों में चिंता

कुशीनगर, खड्डा। बाढ़ से बचाव के लिए बने छितौनी तटबंध को मरम्मत करने के चल रहे कार्य में विलंब से दुश्वारी बढ़ने लगी है। बरसात में नदी के जलस्तर में उतार चढ़ाव से बाधा बाढ़ का खतरा बना रहता है। इसके चलते कार्य की गुणवत्ता प्रभावित होने की आशंका बनी रहती है। बंधे पर बने रेनकट और रैट होल अभी तक नहीं भरे गए हैं, नेपाल के पहाड़ी इलाकों में बारिश होने के कारण नदियों के जलस्तर बढ़ने लगा है। खड्डा क्षेत्र के छितौनी तटबंध के किलोमीटर 6.800 (स्पर सी) व किलोमीटर 8.00 पर बने ठोकर को पुनर्स्थापित करके मजबूत करने की आवश्यकता को देखते हुए लगभग 10 करोड़ रुपये की लागत से कार्य कराने की स्वीकृति मिली थी। वर्तमान में दोनों जगह कार्य चल रहा है। इन कार्यों को 31 मई तक पूर्ण कर लेना था परंतु 18 जून तक अभी 60 प्रतिशत ही कार्य हो पाया है। नेपाल की पहाड़ियों में बरसात शुरू होने के चलते नदी के जलस्तर में उतार चढाव शुरू हो गया है ,मंगलवार को जलस्तर में कुछ वृद्धि हुई तो 8.00 पर पानी कार्यस्थल पर पहुंच गई ।

सनातन संस्कृति की तरह योग भी सनातन और अविरल

भारत की सनातन संस्कृति की तरह योग भी सनातन है, अविरल है। यह तो संभव है कि आकाश के तारे गिन लिए जाएं या धरती के कणों की सही-सही संख्या का पता लगा लिया जाए परन्तु योग के सिंधू कितनी जलधाराएं मिलीं, कितने नद समाहित हुए, इसका अनुमान लगाना भी असंभव है। इन्हीं अनन्त जलराशियों में शामिल है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिसका उद्देश्य व्यक्ति उत्थान से राष्ट्रोत्थान रहा है और संघ ने योग को अपने इस काम का साधन बनाया है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही भगवान शिव को ह्ययोगेश्वरह्र माना गया है। अनेक योग परंपराएँ जैसे नाथयोग, हठयोग, मंत्रयोग, लययोग, राजयोग, आदि सभी भगवान शिव से ही प्रारंभ मानी जाती हैं। गुरु गोरखनाथ के सम्प्रदाय में शिव को 'आदिनाथ' के रूप में पूजा जाता है और ध्यान मुद्रा में उनकी उपासना की जाती है। नाथ संप्रदाय में योग को शिवविद्या या महायोगविद्या कहा गया है, जिसमें आत्मा और ब्रह्मांड के सामरस्य की अनुभूति प्रमुख है। शिवगीता में भगवान शिवजी ने भगवान राम को योग का दिव्य उपदेश दिया, जब वे सीता-वियोग से व्याकुल थे। उन्होंने आत्मज्ञान, चित्त की एकाग्रता, और भौतिक आसक्ति से विरक्ति का विस्तार से निरूपण किया। भगवान शिव को ध्यानमग्न योगी के रूप में दर्शाया गया है, जिनका ध्यान जीवन के परम लक्ष्य ह्यमोक्षह्र की ओर उन्मुख करता है। वेदों में वर्णित शिवसंकल्पसूक्त योग के लिए वैदिक प्रेरणा का आधार है, जो भगवान शिव की चेतना और व्यापक दृष्टिकोण को दर्शार्ता है। रामायणकाल में महर्षि वसिष्ठ ने भगवान श्रीराम को गहन अद्वैत वेदान्त के सिद्धांतों के माध्यम से योग का मार्ग बताया है। राम को उपदेश करते हुए महर्षि वसिष्ठ ने योग वासिष्ठ में कहते हैं -

द्वौ क्रमौ चित्तनाशस्य योगो ज्ञानं च राघव।
योगो वृत्तिनिरोधो हि ज्ञानं सम्यगवेक्षणम्॥
(योगवासिष्ठ)

महर्षि वसिष्ठ योग के अत्यंत प्राचीन और समग्र द्रष्टा माने जाते हैं। वे सप्तर्षि-मंडल में स्थित रहकर आज भी विश्वकल्याण में लगे हुए हैं।

महाभारत में योग को आत्मसाधना और अंतःकरण की शुद्धि का मार्ग माना गया है। महर्षि वेद व्यासजी ने ध्यानयोग के लिए द्वादश साधनों (देश, कर्म, आहार, दृष्टि, मन आदि) के संयम को अनिवार्य बताया है। इसके शान्ति पर्व में ऋषियों को योग की 12 विधियों से ध्यानयोग का अभ्यास करते बताया गया है। भगवान श्रीकृष्ण को भी 'योगेश्वर' कहा गया है क्योंकि वे न केवल योग के आचार्य हैं बल्कि स्वयं योग के मूर्तिमान स्वरूप भी हैं। भगवद्गीता को स्वयं भगवान की साक्षात योगयुक्त वाणी कहा गया है, जो आज भी अज्ञान और मोह का नाश कर आत्मबोध करा सकती है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विभिन्न योगों का उपदेश दिया - कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्ति योग, और ध्यानयोग। 'समत्वं योग उच्यते' और 'योगः कर्मसु कौशलम' जैसे श्लोक योग को जीवन की कुशलता और समत्व की दशा से जोड़ते हैं।

इसी तरह महर्षि पतंजलि, महर्षि चरक, आदिगुरु शंकराचार्य जी से लेकर आधुनिक काल के योग गुरुओं, शिक्षकों व साधकों सहित अनेक ज्ञात-अज्ञात जलनद योग के सिंधू को अपने ज्ञान से समृद्ध करते रहे हैं।



इन्हीं जलधाराओं में एक सम्मानित नाम है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जो अपने जन्म से ही भारतीय संस्कृति व अपने सांस्कृतिक मानबिन्दुओं की पुनर्स्थापना के काम में लगा है। संघ की स्थापना 1925 में डॉ. हेडगेवार द्वारा की गई थी, जिनका उद्देश्य था राष्ट्रभक्ति, शारीरिक और मानसिक विकास और आत्मानुशासन के माध्यम से भारत के युवाओं को संगठित करना। योग को संघ के आध्यात्मिक और शारीरिक प्रशिक्षण के अनिवार्य भाग के रूप में अपनाया गया। संघ की शाखाओं में सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, ध्यान और आसनों का नियमित अभ्यास कराया जाता है।

योग और संघ का संबंध केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मनियंत्रण, सामाजिक सेवा, समरसता और आध्यात्मिक जागरण से भी जुड़ा है। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार स्वयं योग साधक थे और उन्होंने शाखा पद्धति में योग को अनिवार्य रूप से जोड़ा।

संघ के दूसरे सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने भी योग को आंतरिक तप और अनुशासन के अंग के रूप में देखा। उनका कहना था, 'यदि स्वास्थ्य-रक्षा तथा रोग-प्रतिकार करने के लिए योगासनों के अभ्यास की ओर लोगों ने ध्यान दिया तो सर्वसाधारण जनता के स्वास्थ्य में सुधार हो कर उनका औषधियों पर होने वाला व्यय कम होगा तथा सब दृष्टि से उनका कल्याण होगा।'

योग केवल आत्मोन्नति का साधन नहीं बल्कि समाजोद्धार और राष्ट्रनिर्माण का भी पथ है। यही दृष्टिकोण संघ द्वारा अपनाया गया। संघ के प्रमुख शिक्षा वर्गों में योगासन और ध्यान की विधिवत शिक्षा दी जाती है। योग के माध्यम से स्वयंसेवकों में संयम, साहस और शारीरिक स्फूर्ति का विकास किया जाता है, ताकि वे सेवा कार्यों में तत्पर रह सकें। आज भी संघ की हजारों शाखाओं में योगाभ्यास अनिवार्य गतिविधियों में शामिल है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक स्वयंसेवक के रूप में संघ से ही जुड़े रहे हैं। उनके द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की घोषणा और उसे विश्वपटल पर स्थापित करना इस संघ परंपरा की ही एक आधुनिक अभिव्यक्ति है। संघ का यह दृष्टिकोण 'योग ही युक्ति है, योग ही शक्ति है', के सूत्र में संक्षेपित किया जा सकता है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा 2015 के अनुसार, 'योग भारतीय सभ्यता की विश्व को देन है।'

संघ द्वारा योग दिवस पर पारित प्रस्ताव में कहा गया है कि ह्यसंयुक्त राष्ट्र की 69वीं महासभा द्वारा प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा से सभी भारतीय, भारतवंशी व दुनिया के लाखों योग-प्रेमी अतीव आनंद तथा अपार गौरव का अनुभव कर रहे हैं। यह अत्यंत हर्ष की बात है कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र की महासभा के अपने सम्बोधन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का जो प्रस्ताव रखा उसे अभूतपूर्व समर्थन मिला। नेपाल ने तुरंत इसका स्वागत किया। 175 सभासद देश इसके सह-प्रस्तावक बनें तथा तीन महीने से कम समय में 11 दिसम्बर, 2014 को बिना मतदान के, आम सहमति से यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहती है कि योग भारतीय सभ्यता की विश्व को देन है। 'युज' धातु से बने योग शब्द का अर्थ है जोड़ना तथा समाधि। योग केवल शारीरिक व्यायाम तक सीमित नहीं है, महर्षि पतंजलि जैसे ऋषियों के अनुसार यह शरीर मन, बुद्धि और आत्मा को जोड़ने की समग्र जीवन पद्धति है। शास्त्रों में 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः', 'मनःप्रशमनोपायः योगः' तथा 'समत्वंयोगउच्यते' आदि विविध प्रकार से योग की व्याख्या की गयी है, जिसे अपना कर व्यक्ति शान्त व निरामय जीवन का अनुभव करता है। योग का अनुसरण कर संतुलित तथा प्रकृति से सुसंगत जीवन जीने का प्रयास करने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, जिसमें दुनिया के विभिन्न संस्कृतियों के सामान्य व्यक्ति से लेकर प्रसिद्ध व्यक्तियों, उद्यमियों तथा राजनयिकों आदि का समावेश है। विश्व भर में योग का प्रसार करने के लिए अनेक संतों, योगाचार्यों तथा योग प्रशिक्षकों ने अपना योगदान दिया है, ऐसे सभी महानुभावों के प्रति प्रतिनिधि सभा कृतज्ञता व्यक्त करती है।

- राकेश सैन

भविष्य बताने वाले, वर्तमान से बेखबर क्यों

वो जो कहते हैं, ऊपर वाले से सीधा संपर्क है, उनका नेटवर्क अचानक उस समय क्यों डाउन हो जाता है जब कोई भयंकर आपदा, ट्रेन हादसा, प्लेन क्रैश, या भूकंप आता है? क्या उनकी ज्योतिषीय सेटिंग में कोई सर्वर एरर आ जाता है? या फिर 'अदृश्य शक्ति' भी उं४३ङ्मल्ल बोर्ड लगाकर छुट्टी पर चली जाती है? यह प्रश्न अब मजाक नहीं, बल्कि गंभीर सामाजिक विमर्श का विषय बन चुका है।

आज जब कोई गंभीर संकट आता है, तो सबसे पहले न्यूज चैनल, वैज्ञानिक एजेंसियाँ, या रेस्क्यू टीमें सक्रिय होती हैं—ना कि वो बाबा जिनका दावा है कि वे भविष्य देख सकते हैं, या ईश्वर से सीधी बातचीत करते हैं। ये वही लोग हैं जो टीवी पर, मंचों पर, और यूट्यूब लाइव में हजारों लोगों के सामने आँखें मूँदकर बड़े भावुक अंदाज में कहते हैं—ञबेटा, तेरा समय बदलने वाला हैञ, ञतू अगले जन्म में साधु बनेगाञ, या ञतेरे कुल में बहुत बड़ा संत हुआ थाञ। लेकिन जब देश के किसी कोने में कोई बच्चा बोरवेल में गिरता है, जब प्लेन क्रैश होता है, जब कोई महामारी फैलती है—तो ये संत, साधु, भविष्यवक्ता नदारद होते हैं।

अब सवाल यह उठता है कि यदि इनके पास सचमुच कोई 'दिव्य दृष्टि' है, तो वो सार्वजनिक हित में क्यों नहीं लगाई जाती? क्या इनकी चेतनाएँ सिर्फ 'प्रेम विवाह के उपाय', 'दुश्मन को वश में करने की विधि' या 'विदेश यात्रा कब होगी' जैसे प्रश्नों तक ही सीमित हैं? क्या ईश्वर से सीधा संपर्क रखने वाले लोगों की जिम्मेदारी नहीं बनती कि वे देश, समाज और मानवता के हित में समय रहते चेतावनी दें?

हाल ही में एक वायरल टिप्पणी ने सोशल मीडिया पर खूब सुर्खियाँ बटोरीः ञइतने बड़े-बड़े भविष्य वक्ता, ऊपर वाले से सीधा संपर्क... फिर भी किसी बड़े हादसे की खबर तक नहीं मिलती !ञ यह वाक्य जितना सरल है, उतना ही तीव्र और तर्कपूर्ण भी है। क्योंकि यह धार्मिक चमत्कारों की उस 'औद्योगिक प्रणाली' पर सवाल खड़ा करता है जो लोगों की भावनाओं को भुनाकर अरबों का कारोबार करती है।

आजकल हर गली-मोहल्ले में एक बाबा ब्रांड है—किसी का टैगलाइन है ञभाग्य बदलिएञ, तो कोई कहता है समस्या का समाधान सिर्फ 7 दिन में। कुछ तो ऐसे हैं जो स्वयं को 'ईश्वर का अवतार' घोषित कर चुके हैं। लेकिन जब देश में कोई आपदा आती है, तो ये सब 'अवतार' अंडरग्राउंड हो जाते हैं। इनके आश्रमों में सन्नाटा छा जाता है और प्रवचन मंचों पर 'प्रेस नोट' चस्पा कर दिया जाता है—ञबाबा जी ध्यान साधना में हैं, कृपया किसी अन्य समय संपर्क करें।

विचार कीजिए, यदि ये लोग सचमुच संकट पूवार्नुमानित कर सकते हैं, तो क्यों नहीं ठऊफ्रञ्या प्रधानमंत्री कार्यालय को पहले से सूचित कर देते? क्यों नहीं आपदा प्रबंधन में इनका कोई उल्लेख होता है? कारण स्पष्ट है—इनकी 'भविष्यवाणी' एक माके-'टिंग उत्पाद है, एक प्रकार की 'भावनात्मक ज्योतिषीय फैंटेसी', जिसे धार्मिक आस्था की चादर में लपेटकर बेचा जा रहा है।

दुख की बात यह है कि ये बाबा और गुरु, आमजन की पीड़ा और अज्ञान का लाभ उठाकर एक ऐसा मायाजाल बुनते हैं जिसमें न तर्क है, न पारदर्शिता। इनकी भविष्यवाणी 'जेनरिक' होती है—ञअगले 6 महीने बहुत चुनौतीपूर्ण होंगेञ, ञदेश में बड़ी घटना होने वाली हैञ, ञभूकंप या महामारी की संभावना हैञ—अब जरा सोचिए, ये तो किसी भी समय पर लागू किया जा सकता है। यह 'वाटरप्रूफ' भविष्यवाणी होती है—गलत हुई तो कहा जाएगा 'तुम्हारी श्रद्धा कम थी', सही हुई तो 'देखा, बाबा ने पहले ही बताया था'!

बाजार ने भी इन बाबाओं की दुकानदारी को बढ़ावा दिया है। टीवी चैनलों से लेकर सोशल मीडिया तक, हर जगह इनका बोलबाला है। इनके प्रवचन में भक्ति कम, ब्रांडिंग ज्यादा होती है। कोई बाबा यूट्यूब पर लाइव भविष्यवाणी करता है, कोई इंस्टाग्राम पर ध्यान सत्र लेता है। यह विडंबना नहीं, त्रासदी है कि भारत जैसे देश में जहाँ विज्ञान, तकनीक और आपदा प्रबंधन की व्यापक जरूरत है, वहाँ संकट की घड़ी में लोग अब भी किसी बाबा की 'फेसबुक लाइव' पर आश्वासन खोजते हैं। यह एक गहरी सामाजिक असुरक्षा और वैज्ञानिक सोच की कमी का परिचायक है।

यहीं पर जिम्मेदारी बनती है सरकारों, शिक्षकों और सामाजिक संस्थानों की। धर्म आस्था का विषय है, लेकिन जब वह वैज्ञानिक विवेक, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवता से दूर जाकर एक 'कॉरपोरेट माया' बन जाए, तो उसके खिलाफ खड़ा होना जरूरी है। यह कोई धर्म-विरोध नहीं, बल्कि अंधविश्वास-विरोध है।

भविष्यवाणी की आड़ में जो व्यावसायिक ढांचा खड़ा हुआ है, वह न केवल जन-संवेदनाओं से खिलवाड़ करता है, बल्कि आपदा के समय नागरिकों को दिग्भ्रमित भी करता है। जब किसी नदी में बाढ़ आती है, तो एनडीएमए और मौसम विभाग तो चेतावनी जारी करते हैं, लेकिन 'भगवा पोशाकधारी' बाबा लोग चुप रहते हैं। जब ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त होती है, तब न तो किसी ज्योतिषी का वीडियो वायरल होता है, न ही कोई 'भविष्यवक्ता' ग्रीन रूम से बाहर आता है।

सवाल यह भी है कि इनका 'सीधा संपर्क' किससे है? क्या वह संपर्क केवल उन्हीं दिनों काम करता है जब 'दस लाख का यज्ञ', 'एक करोड़ का चढ़ावा', या 'विशेष पूजा' आयोजित की जाती है? क्या ईश्वर को संपर्क में लाने के लिए भी 'डेटा पैक' रिचार्ज कराना पड़ता है? यह कटाक्ष नहीं, कटु सत्य है कि धार्मिक विश्वास अब एक टेलीकॉम योजना जैसा हो गया है—'पैसा दो, नेटवर्क भरोसेमंद होगा'।

एक आम नागरिक के नजरिए से देखें, तो यह धोखा है क्योंकि जब जनता किसी संकट में होती है, तब उसे सही, सटीक, और वैज्ञानिक जानकारी चाहिए होती है—न कि दाढ़ी वाले किसी स्वयंभू ईश्वर के प्रवचन।

इस पूरे परिदृश्य में कुछ संतुलित, विद्वान और सच्चे अध्यात्मविद अपवाद हो सकते हैं, जो वास्तव में समाज सेवा और आत्मकल्याण की बात करते हैं। लेकिन बहुसंख्यक मंचों पर जो चल रहा है, वह एक भविष्य बेचने का उद्योग है—जिसमें भविष्य के नाम पर वर्तमान की चेतना को शिथिल किया जा रहा है।

अब समय है कि हम इस 'पाखंडी भविष्यवाणी तंत्र' की पड़ताल करें। सरकारों को ऐसे फर्जी दावों पर निगरानी रखनी चाहिए। शिक्षा व्यवस्था में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशीलता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मीडिया को भी यह समझना चाहिए कि टीआरपी के चक्कर में वे किस तरह जनता को एक अंधकारमय राह पर ले जा रहे हैं। और अंत में, यह भी जरूरी है कि हम, आप, आम लोग—अब सवाल करना सीखें। अगली बार जब कोई बाबा मंच से यह कहे कि अगले महीने बड़ी घटना घटेगी, तो उनसे पूछें—क्या, कब, कहाँ, कैसे? यदि उनके पास उत्तर नहीं है, तो उनका भविष्य नहीं, आपकी जागरूकता उनका अंत तय करेगी। वरना यह सिलसिला यूँ ही चलता रहेगा—आपदा आती रहेगी, जनता मरती रहेगी, और बाबा लोग 'ध्यान' में चले जाएँगे। और हम सिर्फ यही कहते रह जाएँगेः इतने बड़े-बड़े भविष्य वक्ता, ऊपर वाले से सीधा संपर्क... फिर भी किसी बड़े हादसे की खबर तक नहीं मिलती!

-प्रियंका सौरभ

एकात्म मानववाद का संदेशवाहक है योग

मानव का प्रकृति से अटूट सम्बन्ध होता है। समाज प्रकृति की व्यवस्था पर टिका हुआ है। प्रकृति व मानव एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति के बिना मानव की परिकल्पना नहीं की जा सकती। प्रकृति दो शब्दों से मिलकर बनी है - प्र और कृति। प्र अर्थात प्रकृष्टि (श्रेष्ठ) और कृति का अर्थ है रचना। ईश्वर की श्रेष्ठ रचना अर्थात सृष्टि। प्रकृति से सृष्टि का बोध होता है। प्रकृति अर्थात वह मूलत्व जिसका परिणाम जगत है। कहने का तात्पर्य प्रकृति के द्वारा ही समूचे ब्रह्माण्ड की रचना की गई है। प्रकृति दो प्रकार की होती है- प्राकृतिक प्रकृति और मानव प्रकृति। प्राकृतिक प्रकृति में पांच तत्व- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश शामिल हैं। मानव प्रकृति में मन, बुद्धि और अहंकार शामिल हैं। प्रकृति और मनुष्य के बीच बहुत गहरा संबंध है। मनुष्य के लिए प्रकृति से अच्छा गुरु नहीं है। पृथ्वी मां स्वरुप है। प्रकृति जीवन स्वरुप है। पृथ्वी जननी है। प्रकृति पोषक है। पृथ्वी का पोषण प्रकृति ही पूरा करती है। जिस प्रकार माँ के आँचल में जीव जंतुओं का जीवन पनपता या बढ़ता है तो वहीँ प्रकृति के सानिध्य में जीवन का विकास करना सरल हो जाता है। पृथ्वी जीव जंतुओं के विकास का मूल तत्व है। प्रकृति के बिना मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। मानव या व्यक्ति समाज की एक इकाई है। कई व्यक्तियों का समूह समाज कहलाता है। मानवता का एकीकृत होना ही एकात्म मानववाद है। मानवता एकता का प्रतीक है। एकता अखण्डता को दशार्ती है। योग भारत की अक्षुण्ण एकता का परिचायक है। शरीर और आत्मा का एकीकरण मानवता को जन्म देता है। योग शरीर को आत्मिक अनुभूति प्रदान करता है। स्व के साथ अनुभूति ही दर्शन कहलाता है। एकात्म मानववाद दर्शन का ही हिस्सा है।

एकात्म मानववाद विचारधारा के जनक प्रस्तावक पंडित दीन दयाल उपाध्याय थे। एकात्म मानववाद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मार्गदर्शक दर्शन है। योग अपनेपन को विकसित करता है। अपनापन, अकेलापन को दूर करता है। अपनापन का शाब्दिक अर्थ है- आत्मीयता । आत्मीयता अर्थात अपनी आत्मा के साथ मित्रता। कहने का तात्पर्य- मनुष्य कभी अकेला नहीं होता है। मनुष्य जब नकारात्मक विचारों से ग्रसित होता है तो वह आत्मीयता अनुभव नहीं करता है। नकारात्मकता अकेलेपन को जन्म देती है। सकारात्मकता अपनेपन को जन्म देती है। अपनापन ही अकेलापन को दूर करता है। भीड़ में शामिल होने से हम अपने को अपने आप से अलग करते हैं। भीड़ में शामिल होना अर्थात अपने को अपने आप से अलग करना हुआ। अलग होना आत्मीयता के लक्षण नहीं हैं। अपने आप को अपने से अलग करके कभी भी अकेलापन दूर नहीं किया जा सकता है। अतएव अपनी आत्मीयता को बनाए रखें। जिससे जीवन में अकेलेपन का अनुभव न हो। कोई भी व्यक्ति इस धरती पर अकेला नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति भौतिक रूप से भौतिक संसाधनो व चारो ओर के आवरण से घिरा हुआ है। देखा जाए तो भौतिक रूप से भी व्यक्ति अकेला नहीं है। अतएव हम कह सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति न तो आध्यात्मिक रूप से अकेला है और न ही भौतिक रूप से। योग से रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है। योग रोग को खत्म करता है। अयोग्य वह है जो असंतुलित है। असंतुलन आलस्य की निशानी है। आलसी व्यक्ति असंतुलित होता है। अयोग्य व्यक्ति किसी भी कार्य के लिए अनुपयुक्त होता है। योग आलस्य और प्रमाद को दूर कर व्यक्ति को संतुलित करता है। संतुलन कर्मठता की निशानी है। योग्य व्यक्ति किसी भी कार्य के लिए उपयुक्त होता है। योग व्यक्ति को योग्य बनाता है। ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ में चरैवेति शब्द का उल्लेख मिलता है। चरैवेति अर्थात चलते रहना, रुकना नहीं। हर स्थिति और परिस्थिति में आगे ही आगे बढ़ते चलने का नाम जीवन है। जिस प्रकार बहते हुए जल में पवित्रता बनी रहती है उसी प्रकार निरंतर चलने वाले व्यक्ति में कर्मठता बनी रहती है। अयोग्यता ठहराओ के सिद्धांत पर आधारित है। अयोग्य व्यक्ति ठहरे हुए जल के समान है जबकि योग्य व्यक्ति बहते हुए जल के समान है। योग आंतरिक शांति या मन की शांति बनाए रखता है, जो मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है। योग से शांति, सामंजस्यता और शालीनता का विकास होता है। योग आत्मनिर्भरता के मार्ग को प्रशस्त करता है। आत्मनिर्भरता, रामराज्य की परिकल्पना पर आधारित है। हिन्दू संस्कृति में राम द्वारा किया गया आदर्श शासन रामराज्य के नाम से प्रसिद्ध है। प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2025 में 11 वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस है । 11 वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम/प्रसंग है- एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य। अर्थात पृथ्वी पर बसने वाले सभी मानव स्वस्थ्य हो और उनकी काया निरोगी हो। योग का स्वास्थ्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है। योग से शरीर में नवीन ऊर्जा का संचार होता है। यही नवीन ऊर्जा हमारे शरीर में नई कोशिकाओं का निर्माण करती हैं। शरीर को पुनर्निर्मित करने का काम योग का है। योग से एकात्म मानववाद का विस्तार होता है। अतएव योग वसुधैव कुटुंबकम (पूरा विश्व एक परिवार है) के दर्शन को फलीभूत करता है।

योग एक विशिष्ट आध्यात्मिक प्रक्रिया है

योग प्राचीन ऋषि परम्परा से चला आ रहा है।ऋषियों मुनियों और तत्ववेत्ताओं ने योग को एक विशिष्ट आध्यात्मिक प्रक्रिया बताया है।योग वह युक्ति है जिस-के द्वारा मनुष्य संसार सागर से पार जा सकता है।आत्मा से परमात्मा के मिलन का नाम योग है। चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।आधुनिक अर्थ में योग शारीरिक मुद्रा आसन ध्यान सांस लेने की तकनीकों और व्यायाम को जोड़ता है। आज सुबह उद्यानों में लोग अनुलोम विलोम प्राणायाम भस्त्रिका कपालभाति करते नजर आ जाते हैं।लोग योगासन भी करते हैं जिनसे उनका तन व मन स्वस्थ रहता है। कहा भी गया है कि स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है।

योग का सबसे पहला उल्लेख चार वेदों में से ऋग्वेद में मिलता है।ऋग्वेद भजनों व मंत्रों का संग्रह है।ऋग्वेद में योग के अभ्यास को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के साधन के रूप में वर्णित किया है।

योग संस्कृत भाषा से आया है जिसका अर्थ है एकजुट होना या जोड़ना।योग का अभ्यास बहुत जरूरी है।योग का उद्देश्य मन शरीर और आत्मा को संतुलन में लाना है।

उपनिषद में योग का अर्थ मन और इंद्रियों को नियंत्रित करना बताया है।

ऋषि पतंजलि ने योग सूत्र का प्रतिपादन किया।पतंजलि ने योग को परिभाषित करते हुए बताया कि मन की चंचलता को नियंत्रित करना ही योग। चित्त की वृत्तियों को भली भांति शांत करना ही योग है।अष्टांग योग के अंतर्गत आठ अंग है जिन्हें अष्टांग योग कहा जाता है यम,नियम,आसन,प्राणायाम,

प्रत्याहार,धारणा, ध्यान,समाधि।योग का प्रथम अंग है यम।यम यह नैतिक संयम का अभ्यास है जिसमें अहिंसा सत्य चोरी न करना ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह शामिल है।अपरिग्रह का अर्थ है आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करना।आजकल हम देखते हैं लोग संग्रह करने में लगे हैं जो गलत है आवश्यकता अनुरुप ही संग्रह करने का विधान है।

अष्टांग योग का दूसरा अंग है नियम। व्यक्तिगत अनुशासन का अभ्यास ही नियम है जिसमें पवित्रता,संतोष,तप,स्वाध्याय, और ईश्वर के प्रति समर्पण शामिल है। लोग प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना करते समय बोलते हैं।त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव।त्वमेव विद्या द्रविनम त्वमेव। त्वमेव सर्व मम देव देव।सब कुछ भगवान का बताता है लेकिन सम्पूर्ण भाव से पूर्ण समर्पित नहीं होता है। नियम रूपी नोका में सवार होने पर ही मनुष्य भवसागर पार कर सकता है।इसलिए योग उसी का सिद्ध होता है जो नियम से रहता है।

अष्टांग योग का तृतीय अंग है आसन। आसन शरीर को स्वस्थ बनाता है विभिन्न मुद्राएं होती है।योगासन से शारीरिक लाभ होता है।वज्रासन सुखासन

सिद्धासन भद्रासन पद्मासन ताड़ासन वृक्षासन शीर्षासन भुजंगासन पर्वतासन मकरासन सर्वांगासन शवासन मुख्य है।

अष्टांग योग का चतुर्थ अंग है प्राणायाम।यह श्वांस नियंत्रण की तकनीक है।प्राणायाम से शरीर व मन शांत होता है।प्राणायाम में प्राण शक्ति को बढ़ाना और जीवन ऊर्जा को नियंत्रित किया जाता है।प्राण या श्वास का आयाम ही प्राणायाम है।

अष्टांग योग में पंचम अंग प्रत्याहार कहा गया है।प्रत्याहार का अर्थ है इंद्रियों को बाहरी वस्तुओं से हटाना और उन्हें आंतरिक चेतना की ओर मोड़ना है।

अष्टांग योग का षष्ठम अंग धारणा है।इसका अर्थ है किसी एक वस्तु पर ध्यान केंद्रित करना।

अष्टांग योग का सप्तम अंग है ध्यान।यह धारणा की निरंतरता है।जिसमें व्यक्ति बिना किसी प्रयास के एक ही वस्तु पर ध्यान केंद्रित करता है।

अष्टांग योग का अष्टम अंग है समाधि।यह ध्यान की अंतिम अवस्था कही जाती है।जहाँ व्यक्ति अपनी चेतना को ब्रहांड के साथ एकाकार कर लेता है। श्रीमद्भगवतगीता की विशद व्याख्या परमहंस स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज ने की जिसे यथार्थ गीता के रूप में प्रकाशित किया गया। इस कृति में स्वामी जी ने योग को अविनाशी योग के रूप में समझाते हुए लिखा है कि योग साधना के माध्यम से परमात्मा को पाया जा सकता है।यह साधना सद्गुरु की शरण मे जाकर भगवान के ध्यान और ॐ के नाम के अभ्यास से सम्भव है।यथार्थ गीता में योग को एक अविनाशी,शाश्वत प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है जो अनादिकाल से चली आ रही है।योग साधना के माध्यम से परमात्मा को दर्शन स्पर्श और प्रवेश के लिए सुलभ बना सकता है।योग मुक्ति का मार्ग है।साधक संसार के बंधन से मुक्त होकर परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। रामायण काल मे महाराजा जनक रघु अज दिलीप श्रीराम भरत गुरु वशिष्ट आदि ऋषि राजाओं में योग की वृत्ति विद्यमान थी। योग का उल्लेख भगवतगीता पतंजलि के योग सूत्र और हठ योग पारादीपिका में मिलता है।योग एक आध्यात्मिक अनुशासन है जो शरीर मन और आत्मा के मध्य शाश्वत शांति और सामंजस्य प्राप्त करता है। आज हर व्यक्ति शांति की तलाश में है कोई योग करता है कोई ध्यान मुद्रा में बैठ ध्यान लगाता है। कोई गुरु की शरण में जाकर कठिन तप करता है।

योग का उद्देश्य आत्म साक्षात्कार करना है।स्वयं को जानना है।योग आनद व शांति प्रदान करता है।

योग के प्रकारों के अंतर्गत हठ योग,अष्टांग योग,भक्ति योग,ज्ञान योग और कर्मयोग आते हैं।हठ योग शारीरिक मुद्राओं ओर श्वांस नियंत्रण पर जोर देता है।

अष्टांग योग शक्तिशाली और गतिशील योग प्रणाली है।भक्ति योग प्रेम और समर्पण पर ध्यान केंद्रित करता है। ज्ञान योग -यह बुद्धि और ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करता है।कर्मयोग का अर्थ है निस्वार्थ सेवा करना।

योग व्यक्ति के भीतर की शक्ति और क्षमता को पहचानने और उसका उपयोग करने में सक्षम बनाता है।योग का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को आत्म साक्षात्कार और पूर्णता प्राप्त करने में मदद करना है।

योग का प्रभाव शारिरिक मानसिक भावनात्मक स्तर पर महसूस किया जा सकता है।योग से तनाव कम होता है।मन शांत होता है। सहनशक्ति बढ़ जाती है।

जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में योग बहुत मदद करता है।योग समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का कार्य करता है।योग एक आध्यात्मिक अभ्यास है।योग में शारिरिक मुद्राओं सांस लेने के व्यायाम और ध्यान का उपयोग किया जाता है।



-डॉ. राजेश कुमार शर्मा पुरोहित
भवानीमंडी ,राजस्थान

अच्छे जीवन की भूलभुलैया : क्या खोया, क्या पाया ?

वर्तमान जीवनशैली में सफलता का पैमाना केवल संपत्ति, आलीशान घर, ब्रांडेड कपड़े और कारों में निहित है। यदि कोई व्यक्ति आर्थिक रूप से सक्षम है, तो उसे अपने समाज में स्वतः ही ₹सफल₹ माना जाने लगता है, भले ही उस सफलता के पीछे बेईमानी, छल-कपट, शोषण या नैतिक गिरावट क्यों न हो। यह धारणा कि ₹साध्य ही सब कुछ है, साधन की परवाह नहीं₹, अब आम होती जा रही है। इस विचारधारा ने ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, संवेदना और कर्तव्य जैसे नैतिक मूल्यों को बहुत पीछे छोड़ दिया है।

आज का समाज एक ऐसे व्यक्तिवाद का शिकार है जहाँ ₹मैं₹ ही प्राथमिक है, हम का कोई विशेष महत्व नहीं रहा। यह आत्मकेन्द्रिकता हर क्षेत्र में दिखाई देती है—शहरी नियोजन से लेकर पारिवारिक ढांचे तक। बड़े-बड़े शहरों में सामूहिक स्थानों, खेल मैदानों, पुस्तकालयों और सार्वजनिक चौपालों की संख्या घट रही है। लोग एक-दूसरे से कटते जा रहे हैं, संवाद सीमित होता जा रहा है और सामाजिक जुड़ाव केवल डिजिटल नेटवर्कों तक सिमट कर रह गया है। यहां तक कि त्योहार और पारिवारिक आयोजन भी अब फोटो-ऑप बनकर रह गए हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया पर दिखाना होता है, न कि किसी भी प्रकार की वास्तविक आत्मीयता साझा करना।

भौतिकता के इस अंधे दौड़ में तात्कालिक सुख को दीर्घकालिक भलाई पर प्राथमिकता दी जा रही है। संयम, अनुशासन और तप की भावना कमजोर पड़ती जा रही है। सोशल मीडिया, उपभोक्ता वस्तुओं और बाजारवादी प्रचार के जरिए यह धारणा पक्की कर दी गई है कि अधिकतम उपभोग ही सुख का पर्याय है। लोग तुरंत मिल रहे संतोष में इतना लिप्त हो चुके हैं कि आत्म-संयम, आत्मनिरीक्षण और दीर्घकालिक दृष्टिकोण जैसी प्रवृत्तियाँ हास्यास्पद प्रतीत होती हैं।

उपभोग के निर्णयों में नैतिकता का कोई स्थान नहीं बचा है। हम जो पहनते हैं, खाते हैं या उपभोग करते हैं—उसके पीछे की कहानी, चाहे वह पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली हो या किसी मजदूर के शोषण की, हमें प्रभावित नहीं करती। उदाहरण के लिए, फास्ट फैशन का उद्योग आज भी फल-फूल रहा है, भले ही हम सबको पता है कि इसमें कैसे सस्ते श्रम और पर्यावरणीय संसाधनों का दोहन होता है। नैतिक उपभोक्तावाद आज भी केवल कुछ सीमित वर्गों तक सिमटा हुआ है।

इस सोच का परिणाम है कि समाज में नैतिक मूल्यों का क्षरण तीव्र गति से हो रहा है। लोग अब परिणामों को ही सब कुछ मानते हैं—उस परिणाम की प्राप्ति की प्रक्रिया चाहे जितनी भी अपारदर्शी या अनैतिक क्यों न हो। यह प्रवृत्ति केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि कॉर्पोरेट दुनिया, राजनीति, शिक्षा, चिकित्सा, और मीडिया जैसे हर संस्थान में दिखती है। जब लाभ की भूख नैतिक सीमाओं को लांघती है, तब कॉर्पोरेट घोटाले जन्म लेते हैं, नेताओं की ईमानदारी संदेह के घेरे में आती है और शिक्षा की पवित्रता पर व्यापार हावी हो जाता है।

नैतिक मूल्यों का ह्रास केवल संस्थागत नहीं है—व्यक्तिगत स्तर पर भी सहानुभूति और करुणा कम होती जा रही है। आज का व्यक्ति अपने लक्ष्य की पूर्ति में इतना डूबा हुआ है कि उसे पड़ोसी की पीड़ा, बुजुर्गों की उपेक्षा, या मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं से कोई सरोकार नहीं रह गया है। यह संवेदनहीनता धीरे-धीरे समाज को ऐसे व्यक्तियों का समूह बना रही है जो साथ रहते हुए भी अकेले हैं, और जिनके बीच आत्मीयता नहीं, केवल उपयोगिता का संबंध रह गया है।

> **आधुनिक समाज में अच्छे जीवन की जो धारणा प्रचलित है, वह दिन-ब-दिन और भी अधिक संकीर्ण, आत्मकेन्द्रित और भौतिकतावादी होती जा रही है। जीवन के उद्देश्य को अब केवल आर्थिक सफलता, सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत सुख तक सीमित कर दिया गया है। इस सोच में मानवीय करुणा, नैतिकता, सामूहिक भलाई और आंतरिक उद्देश्य जैसे तत्वों के लिए कोई स्थान नहीं बचा है। यह एक ऐसा बदलाव है जो न केवल व्यक्ति की आत्मा को भीतर से खोखला कर रहा है, बल्कि समाज और संस्थाओं के नैतिक ढांचे को भी दिन-प्रतिदिन तोड़ता जा रहा है।**

साथ ही, नैतिक सापेक्षवाद का चलन भी बढ़ा है। जो चीजें पहले स्पष्ट रूप से सही और गलत मानी जाती थीं, अब उन्हें परिस्थितियों के अनुसार उचित या अनुचित ठहराया जाने लगा है। परीक्षाओं में नकल करना, कार्यस्थलों पर झूठ बोलना, रिश्वत देकर काम करवाना—इन सबको अब ₹सिस्टम का हिस्सा₹ मान लिया गया है। यह विचार कि ₹अगर सब कर रहे हैं, तो मैं क्यों नहीं ?₹ एक सामूहिक नैतिक पतन का संकेत है।

यह सब केवल सामाजिक नहीं, बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी खतरनाक है। जब जीवन का उद्देश्य केवल अधिक से अधिक उपभोग बन जाता है, तो संसाधनों का दोहन अपरिहार्य हो जाता है। जलवायु परिवर्तन, जल संकट, जैव विविधता का विनाश—ये सब इसी ₹अच्छे जीवन₹ की भ्रामक परिभाषा के दुष्परिणाम हैं। यह विडंबना ही है कि हम एक ऐसा जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं जो पृथ्वी के भविष्य को ही अंधकारमय बना रहा है।

आज की स्थिति यह है कि नैतिकता अब केवल ब्रांडिंग का एक उपकरण बन गई है। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ और संस्थाएँ कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के नाम पर कुछ घटनात्मक कार्यक्रम करके अपने दामन को उजला दिखाने का प्रयास करती हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर परिवर्तन नहीं होता। यह ₹सतही नैतिकता₹ समाज को धोखा देने के साथ-साथ आत्मप्रवंचना को भी जन्म देती है।

यदि हमें इस गिरावट को रोकना है और एक संतुलित, करुणामय तथा नैतिक समाज की ओर बढ़ना है, तो हमें ₹अच्छे जीवन₹ की धारणा को पुनर्परिभाषित करना होगा। जीवन की सफलता को केवल संपत्ति और प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि उद्देश्य, सद्गुणों, सहानुभूति और सामूहिक भलाई से जोड़ना होगा। इस दिशा में कुछ परंपरागत दर्शन—जैसे बौद्ध धर्म, गांधीवाद और जैन दृष्टिकोण—महत्वपूर्ण संकेत देते हैं। ये परंपराएँ आंतरिक संतुलन, अपरिग्रह, और नैतिक अनुशासन को जीवन की सफलता का आधार मानती हैं।

एक अच्छा जीवन वह है जो केवल अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए भी जिया जाए। जिसमें सामुदायिक सहयोग, पर्यावरणीय संवेदनशीलता और आत्म-संयम हो। जहाँ हम जो उपभोग करें, वह जिम्मेदारी के साथ करें—यह सोचकर कि हमारे निर्णय दूसरों को, प्रकृति को और आने वाली पीढ़ियों को कैसे प्रभावित करेंगे। सरकार द्वारा शुरू किया गया लाइफ (लाइफ फॉर इन्वयारमेंट) जैसे अभियान इस दिशा में एक सकारात्मक प्रयास हैं, परंतु इनका प्रभाव तभी होगा जब वे समाज के हर वर्ग तक नैतिक चेतना के साथ पहुँचें।

इस प्रक्रिया में शिक्षा की भी केंद्रीय भूमिका है। नई शिक्षा नीति 2020 ने नैतिक और जीवन कौशल शिक्षा को प्राथमिकता देने की बात की है, जो एक स्वागतयोग्य कदम है। अगर हम प्रारंभिक स्तर पर बच्चों को सहानुभूति, कर्तव्य, सच्चाई और न्याय जैसे मूल्यों से परिचित कराएँ, तो एक पीढ़ी तैयार हो सकती है जो ₹अच्छे जीवन₹ की एक व्यापक और समावेशी परिभाषा को आत्मसात कर सके।

अंततः, जीवन का अर्थ केवल जीने में नहीं, बल्कि सही ढंग से जीने में है। और सही ढंग से जीना केवल भौतिक सफलता में नहीं, बल्कि एक ऐसे संतुलन में है जहाँ आत्मा शांत हो, समाज स्वस्थ हो और पृथ्वी संरक्षित हो। यदि हम ऐसा जीवन जीना सीखें, तो शायद हम न केवल अपने लिए, बल्कि पूरी मानवता के लिए एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।

डा. सत्यवान सौरभ

सदियों पुराना है भारत में योग का इतिहास

दुनियाभर के 170 से भी ज्यादा देश प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाते हैं और योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने का संकल्प लेते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा रखे गए प्रस्ताव के जवाब में 11 दिसंबर 2014 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना की थी और वैश्विक स्तर पर पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया था। इस वर्ष पूरी दुनिया 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' थीम के साथ 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना रही है। प्रतिवर्ष यह दिवस मनाने का उद्देश्य योग को एक ऐसे आंदोलन के रूप में बढ़ावा देना है, जो व्यक्ति की तन्यकता को उन्नत करता है और समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए कल्याण को बढ़ावा देता है। वैसे तो योग को विश्व स्तर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सतत प्रयासों के चलते वर्ष 2015 में अपनाया गया था किंतु भारत में योग का इतिहास सदियों पुराना है। माना जाता रहा है कि पृथ्वी पर सभ्यता की शुरूआत से ही योग किया जा रहा है लेकिन साक्ष्यों की बात करें तो योग करीब पांच हजार वर्ष पुरानी भारतीय परंपरा है। करीब 2700 ईसा पूर्व वैदिक काल में और उसके बाद पतंजलि काल तक योग की मौजूदगी के ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं। महर्षि पतंजलि ने अभ्यास तथा वैराग्य द्वारा मन की वृत्तियों पर नियंत्रण करने को ही योग बताया था। हिंदू धर्म शास्त्रों में भी योग का व्यापक उल्लेख मिलता है। विष्णु पुराण में कहा गया है कि जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतया मिलन ही अद्वेतानुभूति योग कहलाता है। इसी प्रकार भगवद्गीता बोध में वर्णित है कि दुःख-सुख, पाप-पुण्य, शत्रु-मित्र, शीत-उष्ण आदि द्वंदों से अतीतय मुक्त होकर सर्वत्र समभाव से व्यवहार करना ही योग है। भारत में योग को निरोगी रहने की करीब पांच हजार वर्ष पुरानी मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक पद्धति के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो भारतीयों की जीवनचर्या का अहम हिस्सा है। सही मायनों में योग भारत के पास प्रकृति प्रदत्त ऐसी अमूल्य धरोहर है, जिसका भारत सदियों से शारीरिक और मानसिक लाभ उठाता रहा है, लेकिन कालांतर में इस दुर्लभ धरोहर की अनदेखी का ही नतीजा है कि लोग तरह-तरह की बीमारियों के मकड़जाल में जकड़ते गए। वैसे तो स्वामी विवेकानंद ने भी अपने शिकागो सम्मेलन के भाषण में सम्पूर्ण विश्व को योग का संदेश दिया था लेकिन कुछ वर्षों पूर्व योग गुरु स्वामी रामदेव द्वारा योग विद्या को घर-घर तक पहुंचाने के बाद ही इसका व्यापक प्रचार-प्रसार संभव हो सका और आमजन योग की ओर आकर्षित होते गए। देखते ही देखते कई देशों में लोगों ने इसे अपनाना शुरू किया। आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में योग का महत्व कई गुना बढ़ गया है। योग न केवल कई गंभीर बीमारियों से छुटकारा दिलाने में मददगार साबित होता है बल्कि मानसिक तनाव को खत्म कर आत्मिक शांति भी प्रदान करता है। दरअसल यह एक ऐसी साधना, ऐसी दवा है, जो बिना किसी लागत के शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का इलाज करने में सक्षम है। यह मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ाकर दिनभर शरीर को ऊजार्वान बनाए रखता है। यही कारण है कि अब युवा एरोबिक्स व जिम छोड़कर योग अपनाने लगे हैं। माना गया है कि योग तथा प्राणायाम से जीवनभर दवाओं से भी ठीक न होने मधुमेह रोग का भी इलाज संभव है। यह वजन घटाने में भी सहायक माना गया है। योग की इन्हीं महत्ताओं को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा से आह्वान किया था कि दुनियाभर में प्रतिवर्ष योग दिवस मनाया जाए ताकि प्रकृति प्रदत्त भारत की इस अमूल्य पद्धति का लाभ पूरी दुनिया उठा सके। यह भारत के बेहद गर्व भरी उपलब्धि रही कि संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री के इस प्रस्ताव के महज तीन माह के भीतर 177 देशों ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने के प्रस्ताव पर स्वीकृति की मोहर लगा दी, जिसके उपरांत संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 11 दिसम्बर 2014 को घोषणा कर दी गई कि प्रतिवर्ष 21 जून का दिन दुनियाभर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए 21 जून का ही दिन निर्धारित किए जाने की भी खास वजह रही। दरअसल यह दिन उत्तरी गोलार्ध का पूरे कैलेंडर वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है।

परिवार व समाज से अपेक्षित भावनात्मक समर्थन न मिल पाने पर भी अक्सर युवा मादक द्रव्यों की ओर आकर्षित होने लगते हैं

विजय गर्ग

नशों का निरंतर बढ़ता प्रचलन देश भर के लिए चिंतनीय मुद्दा बन चुका है। नशा समाप्ति के हरसंभव प्रयासों के बावजूद कुछ राज्यों में समस्या गंभीर रूप धारण करती जा रही है। पंजाब का नाम भी इसी सूची में सम्मिलित है। बार्डर पार पाकिस्तान से ड्रोन के जरिए राज्य तक पहुंच बनाने वाली नशा तस्करी ही पंजाब की एकमात्र चुनौती नहीं; मादक द्रव्यों की इस घुसपैठ में अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से बड़े पैमाने पर आने वाली साइकोट्रॉपिक ड्रग्स भी शामिल हैं। राष्ट्रीय स्तर पर आकलन करें तो इन दवाओं का नेटवर्क देश में भी बराबर सक्रिय मिलेगा। एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स (एएनटीएफ) के एडीजीपी अनुसार, हिमाचल प्रदेश के बद्दी, गुजरात तथा देहरादून से संचालित विस्तृत नेटवर्क पंजाब व निकटवर्ती क्षेत्रों में अपना जाल फैला रहा है, जिसमें बिना लाइसेंस कई दवाइयां बनाने वाले कारखानों के साथ कुछ पंजीकृत फार्मा कंपनियों के नाम भी सामने आ रहे हैं। एडीजीपी के तहत, 1 मार्च से अब तक 25.70 लाख नशे की गोलियां व कैप्सूल बरामद हो चुके हैं, 44 के करीब दवा कंपनियां एएनटीएफ के रडार पर हैं।

नेशनल ड्रग डिपेंडेंट ट्रीटमेंट की एक रिपोर्ट देखें तो देश की कुल जनसंख्या के 10 से 75 साल तक की आयुवर्ग के लगभग 20 प्रतिशत लोग किसी न किसी प्रकार के नशे के अभ्यस्त हैं। महिलाएं भी इसमें अपवाद नहीं। आजकल कम उम्र के बच्चे भी इसकी चपेट में आने लगे हैं। अनिद्रा, अवसाद, तनाव आदि रोगों के उपचार में प्रयुक्त होने वाली अनेक दवाओं का प्रयोग नशे के रूप में होना गहन चिंता का विषय बन चुका है। 'ड्रग वॉर डिस्टॉर्शन और वडोर्मीटर' की एक रिपोर्ट के मुताबिक, देश में अवैध दवाओं का धंधा बढ़कर लगभग 30 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया है, जबकि नियमानुसार, भारत में ऐसी दवाओं का सेवन अथवा इन्हें चिकित्सक की पर्ची के बगैर बेचना दोनों ही कानूनन निषेध हैं।

दरअसल, इस मुद्दे ने भारत में 'नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रॉपिक सब्सटेंस' अधिनियम 1985 (एनडीपीएस), के बाद प्रमुखता हासिल की। कई भारतीय राज्य उपचारात्मक तथा निवारक उपायों के साथ-साथ नशीली दवाओं के उपयोग एवं दुरुपयोग के दुष्प्रभावों के खिलाफ जागरूकता फैलाकर इस समस्या का निराकरण करने की कोशिश में लगे हैं। हालांकि, सतही तौर पर देश में इस खतरे से निपटने के लिए शायद ही कोई कारगर नीति संज्ञान में हो! कटु, लेकिन सत्य यही है कि नशीली दवाओं के दुरुपयोग से निपटने हेतु राज्य प्राधिकारियों तथा स्थानीय सरकारों की सीमित भूमिका से भारत में मादक पदार्थों के उपयोग में कमी नहीं आ पाई।

नशों के प्रति बढ़ते रुझान में विविध कारक ज़िम्मेदार रहते हैं, जैसे- तनाव, अकेलापन, असफलता आदि। रिश्तों से जुड़ी समस्यायों, निर्धनता, बेरोजगारी, शैक्षिक तथा मनोरंजक संसाधनों तक सीमित पहुंच के चलते भी मादक द्रव्यों के सेवन की संभावना बढ़ जाती है क्योंकि कुछ लोग इनसे बचने अथवा निपटने के लिए नशीली दवाओं का सहारा लेने लगते हैं। नशे में संलिप्त किसी पारिवारिक सदस्य की देखा-देखी, सोशल मीडिया, फि ल्मों अथवा कुसंगति के प्रभाव में भी नशीली दवाओं का सेवन आम देखा गया। युवाओं में साइकोट्रॉपिक ड्रग्स का चलन बढ़ने में प्रमुख कारण है, मूल्य में कम होने के साथ इनका सहज ही उपलब्ध हो जाना। हालांकि ये दवाएं बिना डॉक्टर की पर्ची के बेचने-खरीदने की सख़्त मनाही है, बावजूद इसके अवैध ढंग से बिकने वाली इन दवाओं का नशे के तौर पर इस्तेमाल आजकल व्यापक स्तर पर होने लगा है।

मेडिकल विशेषज्ञों के अनुसार, इन नशे की दवाओं का अनुचित उपयोग करने से मानसिक अवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। हेरोइन व अन्य किस्म के नशों का सेवन करने वाले व्यक्ति अक्सर इन ड्रग्स के आदी पाए जाते हैं। दवा का इस्तेमाल बेशक दर्दनाक भावनाओं जैसे- चिंता, अवसाद, एकाकीपन आदि से निपटने के नाम पर किया जाता है लेकिन नशे के रूप में बेलगाम आदत, वास्तव में समस्यायों को बद से बदतर बना छोड़ती है।

नशीली दवाएं ग्रहण करने की लत न केवल व्यसनी का शारीरिक-मानसिक-बौद्धिक स्वास्थ्य बिगाड़ती हैं अपितु पारिवारिक सदस्यों की सामाजिक व आर्थिक क्षमताओं के दृष्टिगत भी प्रतिकूलताएं ही लेकर आती हैं। समूचे समाज तथा सरकार पर अवांछित वित्तीय बोझ बढ़ने लगता है, जिससे शासन-कानून-व्यवस्था एवं स्वास्थ्य सेवा प्रणाली, सभी प्रभावित होते हैं।

संविधान के अनुच्छेद 47 में सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार और हानिकारक पदार्थों के निषेध का आह्वान किया गया है। हानिकारक दवाओं का खतरा सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था में गहरी जड़ें जमाए बैठी विकृतियों की अभिव्यक्ति है, अतः इसका समाधान प्रणालीगत, बहुआयामी होना चाहिए। समस्या का निपटान प्रभावशाली ढंग से हो सके, इसके लिए भारत को मजबूत विनियमन, उन्नत कानून तथा राज्यों के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही रोकथाम, पुनर्वास तथा सख्त प्रवर्तन पर केंद्रित एक व्यापक राष्ट्रीय नीति भी बाकायदा तैयार करनी होगी। परिवार व समाज से अपेक्षित भावनात्मक समर्थन न मिल पाने पर भी अक्सर युवा मादक द्रव्यों की ओर आकर्षित होने लगते हैं। मैत्रीपूर्ण वातावरण विकसित किया जाए तो यह दुष्वृत्ति काफी हद तक घट सकती है।

विजय गर्ग
मलोट पंजाब

भारत निभा सकता है इजरायल-ईरान युद्ध में अहम भूमिका

रूस-यूक्रेन एवं इजरायल-हमास के बीच युद्ध अभी समाप्त भी नहीं हुआ है और तीसरे मोर्चे इजरायल-ईरान के बीच भी युद्ध प्रारम्भ हो गया है। हालांकि इस बीच भारत-पाकिस्तान के बीच भी युद्ध छिड़ गया था परंतु भारत की बड़े भाई की भूमिका के चलते इस युद्ध को शीघ्रता से समाप्त करने में सफलता मिल गई थी। दो देशों के बीच युद्ध में किसी एक देश का फायदा नहीं होकर बल्कि दोनों ही देशों का नुकसान ही होता है। परंतु, आवेश में आकर कई बार दो बड़े देश भी आपस में टकरा जाते हैं एवं इन दोनों देशों के पक्ष एवं विपक्ष में कुछ देश खड़े हो जाते हैं जिससे कुछ इस प्रकार की परिस्थितियां निर्मित हो जाती हैं कि विश्व युद्ध छिड़ जाते हैं। वर्ष 1914 से वर्ष 1918 के बीच प्रथम विश्व युद्ध एवं वर्ष 1939 से वर्ष 1945 के बीच द्वितीय विश्व युद्ध इसके उदाहरण हैं। इजरायल-ईरान के बीच हाल ही में प्रारम्भ हुए युद्ध में अमेरिका भी कूदने की तैयारी करता हुआ दिखाई दे रहा है। अगर ऐसा होता है तो बहुत सम्भव है कि ईरान की सहायता के लिए रूस एवं चीन भी इस युद्ध में कूद पड़ें एवं यह युद्ध तृतीय विश्व युद्ध का स्वरूप ले ले। ऐसा कहा जा रहा है कि इजरायल एवं अमेरिका ईरान में सत्ता परिवर्तन करवाना चाह रहे हैं ताकि ईरान में उनके हितों को साधने वाली सरकार स्थापित हो सके।

वैश्विक स्तर पर आज परिस्थितियां बहुत सहज रूप से नहीं चल रही है। विभिन्न देशों के बीच विश्वास की कमी हो गई है जिसके चलते छोटे छोटे मुद्दों को तूल दी जाकर आपस में खटास पैदा करने के प्रयास हो रहे हैं। कुछ देश, दो देशों के बीच, इन मुद्दों को हवा देते हुए भी दिखाई दे रहे हैं। जैसे आतंकवाद के मुद्दे को ही लें, यदि ये देश आतंकवाद से स्वयं ग्रसित हैं तो इनके लिए आतंकवाद बुराई की जड़ है और यदि कोई अन्य देश आतंकवाद को लम्बे समय से झेल रहा है तो इन देशों के लिए आतंकवाद कोई बहुत बड़ा मुद्दा नहीं है। बल्कि, आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले देशों को प्रोत्साहन दिया जाता हुआ दिखाई दे रहा है। चौधरी बन रहे कुछ देश अपनी विस्तरवादी नीतियों के चलते कई देशों में अपने हित साधने वाली सरकारों की स्थापना करना चाह रहे हैं एवं इन देशों में इस प्रकार की परिस्थितियां निर्मित करने के प्रयास कर रहे हैं ताकि ये देश आपस में लड़ाई प्रारम्भ करें। रूस एवं यूक्रेन के बीच युद्ध इसका जीता जागता उदाहरण है । साथ ही, कुछ देशों की कथनी और करनी में पाए जाने वाले फर्क के चलते भी वैश्विक स्तर पर परिस्थितियां बिगड़ रही हैं। चौधरी बन रहे देशों को तो उदाहरण पेश करते हुए अपनी कथनी एवं करनी में फर्क को समाप्त करना ही होगा। अन्यथा, वैश्विक स्तर पर परिस्थितियां भयावह स्तर तक पहुंच सकती हैं।

चूंकि इजरायल भी आतंकवाद से पीड़ित देश है एवं इजरायल की सीमाएं चार मुस्लिम राष्ट्रों से जुड़ी हुई हैं; यथा, उत्तर में लेबनान, दक्षिण पश्चिम में ईजिप्ट (एवं गाजा), पूर्व में जॉर्डन (एवं वेस्ट बैंक) एवं उत्तर पूर्व में सीरिया। अतः इजरायल अत्यधिक आक्रात्मकता के साथ आतंकवादियों (हम्मास एवं हूती आदि संगठनों) से युद्ध करता रहता है। इस्लाम के अनुयायी यहूदियों के कट्टर दुश्मन हैं, इसके चलते भी इजरायल के नागरिकों को आतंकवाद को लम्बे समय से झेलना पड़ रहा है।

ईरान के बारे में तो कहा जा रहा है कि ईरान स्थित लगभग 60 प्रतिशत मस्जिदों में इबादत के लिए कोई भी व्यक्ति पहुंच ही नहीं रहा है क्योंकि ईरान में एवं ईरान द्वारा पड़ोसी देशों में फैलाए गए आतंकवाद से ईरान के मूल नागरिक अत्यधिक परेशान हैं। महिलाओं पर आतंकवादियों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों से स्थानीय नागरिक बहुत दुखी हैं। अतः अब वे अपने पुराने धर्म जोरोस्ट्रीयन को अपनाने के लिए आतुर दिखाई दे रहे हैं अथवा इस्लाम धर्म का परित्याग करना चाह रहे हैं। जोरोस्ट्रीयन, ईरान का मूल धर्म हैं एवं यह अब ईरान के कुछ (बहुत कम) क्षेत्रों में सिमट कर रह गया है। भारत में भी जोरोस्ट्रीयन धर्म को मानने वाले पारसी समुदाय के कुछ नागरिक शांतिपूर्वक रह रहे हैं एवं भारत के आर्थिक विकास में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर निर्मित हो रही उक्त वर्णित परिस्थितियों के बीच भारत की विशेष भूमिका रह सकती है क्योंकि भारत के इजरायल एवं ईरान दोनों ही देशों के साथ आर्थिक रिश्ते बहुत मजबूत हैं। भारत, ईरान से भारी मात्रा में कच्चा तेल खरीदता रहा है एवं भारत ने ईरान में चाबहार बंदरगाह के निर्माण में भारी आर्थिक एवं तकनीकी सहायता प्रदान की है। चाबहार बंदरगाह का संचालन भी ईरान की सरकार के साथ भारतीय इंजीनियरों द्वारा ही किया जा रहा है। भारत और ईरान के बीच प्रतिवर्ष 200 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि का विदेशी व्यापार होता है। दूसरी ओर, इजरायल भारत का रणनीतिक साझीदार है। भारत इजरायल से भारी मात्रा में सुरक्षा उपकरण भी खरीदता है। भारत और इजरायल के बीच प्रतिवर्ष 650 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि का विदेशी व्यापार होता है, इसमें भारत द्वारा इजरायल से आयात किये जाने वाले सुरक्षा उपकरणों की राशि शामिल नहीं है। कुल मिलाकर, भारत के इजराईल एवं ईरान, दोनों देशों के साथ बहुत पुराने व्यापारिक एवं सांस्कृतिक रिश्ते हैं।

भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम'; 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' एवं 'सर्वे भवंतु सुखिनः' की भावना पर विश्वास किया जाता है। अतः भारतीय नागरिक सामान्यतः शांत स्वभाव के होते है एवं पूरे विश्व में ही भ्रातत्व के भाव का संचार करते हैं। आज 4 करोड़ से अधिक भारतीय मूल के नागरिक विभिन्न देशों के आर्थिक विकास में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं।

इन देशों में होने वाले अपराधों में भारतीय मूल के नागरिकों की संलिप्तता लगभग नहीं के बराबर पाई गई है। इसी कारण के चलते आज वियतनाम, जापान, इजरायल, आस्ट्रेलिया एवं सिंगापुर जैसे कई देश भारतीय मूल के नागरिकों को अपने देश में कार्य करने एवं बसाने में सहायता करते हुए दिखाई दे रहे हैं। खाड़ी के देश यथा ओमान, बहरीन, सऊदी अरब, यूनाइटेड अरब अमीरात आदि में भी लाखों की संख्या में भारतीय मूल के नागरिक निवास कर रहे हैं एवं शांतिप्रिय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कुल मिलाकर, विभिन्न देशों में निवासरत भारतीय मूल के नागरिकों का रिकार्ड बहुत ही संतोषजनक पाया जाता है, क्योंकि, भारतीयों की मूल प्रकृति ही सनातन हिंदू संस्कारों के अनुरूप पाई जाती है एवं वे किसी भी प्रकार के कर्म में धर्म को जोड़कर ही इसे सम्पन्न करने का प्रयास करते हैं। और, धर्म के अनुरूप किये गए किसी भी कार्य से किसी का अहित हो ही नहीं सकता।

उक्त वर्णित परिप्रेक्ष्य में वैश्विक स्तर पर जब चौधरी बन रहे देशों द्वारा अन्य देशों के साथ न्याय नहीं किया जाता हुआ दिखाई दे रहा है तो ऐसे में भारत को आगे आकर युद्ध में झौंके जा रहे देशों के नागरिकों की मदद करनी चाहिए।

भारत की तो वैसे भी नीति ही 'वसुधैव कुटुम्बकम' की है। यदि पूरे विश्व में भाईचारा फैलाना है तो सनातन हिंदू संस्कृति के अनुपालन से ही यह सब सम्भव हो सकता है। उक्त परिस्थितियों के बीच सनातन हिंदू संस्कृति की स्वीकार्यता विभिन्न देशों के नागरिकों की बीच तेजी से बढ़ भी रही है क्योंकि कई देश अब आतंकवाद से बहुत अधिक परेशान हो चुके हैं। अतः अब वे किसी तीसरे रास्ते की तलाश में हैं।

इन विपरीत परिस्थितियों के बीच उनके पास अब विकल्प केवल सनातन हिंदू संस्कृति के संस्कारों को अपनाने का ही बचता है, जिसके प्रति वे लालायित भी हैं। और फिर, आतंकवाद से यदि छुटकारा पाना है तो इससे लड़ते हुए छुटकारा पाने में तो कुछ देशों को कई प्रकार के बलिदान देने पड़ सकते हैं और यदि सनातन हिंदू संस्कृति के संस्कारों को स्वीकार कर लिया जाता है तो कई देशों के नागरिकों को इस बलिदान से बचाया जा सकता है। अतः विश्व के देशों में सनातन हिंदू संस्कृति के संस्कारों को तेजी से वहां के स्थानीय नागरिकों के बीच किस प्रकार फैलाया जा सकता है, इस विषय पर विश्व में शांति स्थापित करने के उद्देश्य से अब गहन चिंतन एवं मनन करने की आवश्यकता है।

दुनिया में कोई फ्री में नहीं खिलाता, व्हाइट हाउस में ट्रंप की रोटी खाते ही समझे मुनीर



पाकिस्तान को अपने पहले कार्यकाल में 'धोखेबाज' और 'आतंकवादियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह' कहने वाले ट्रंप का आतंकी देश के प्रति अचानक यू-टर्न पूरी दुनिया को चौंका रहा है। लेकिन सब यह भी समझ रहे हैं कि अमेरिका इस समय पाकिस्तान का उपयोग करना चाह रहा है। अमेरिका में तो ट्रंप के इन पैतरों का विश्लेषण भी शुरू हो गया है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल असीम मुनीर के साथ दोपहर का भोज करके पूरी दुनिया को यह स्पष्ट संदेश दे दिया है कि पाकिस्तान में सरकार नहीं बल्कि सेना ही असली ताकत रखती है। ट्रंप ने जिस तरह से असीम मुनीर को खाना खिलाते समय कहा कि मुझे पाकिस्तान से प्यार है उससे यह भी संकेत मिले कि अमेरिकी राष्ट्रपति के मन में कुछ बड़ा चल रहा है। हम आपको बता दें कि ईरान पर हमला करने की तैयारी कर चुका अमेरिका चाहता है कि पाकिस्तान उसकी मदद करे। हम आपको याद दिला दें कि अफगानिस्तान में तालिबान शासन को उखाड़ने के लिए भी अमेरिका ने पाकिस्तान को अपना बेस बनाया था। चूंकि ईरान की सीमाएं भी पाकिस्तान के साथ लगती हैं इसलिए अमेरिका चाहता है कि पाकिस्तान एक बार फिर उसे अपना बेस वहां बनाने दे ताकि उसके लड़ाकू विमान वहीं से उड़ान भर सकें। अमेरिका जानता है कि पाकिस्तान में इस बात की इजाजत वहां की सरकार नहीं बल्कि सेना ही दे सकती है इसलिए मुनीर को लंच पर बुलाया गया।

इसके अलावा इजराइल भी चाहता है कि ईरान को किसी भी मुस्लिम देश की मदद नहीं मिले, इसके लिए उसने अमेरिका से पाकिस्तान को समझाने के लिए कहा था। हम आपको बता दें कि पाकिस्तान और इजराइल के बीच राजनयिक संबंध नहीं हैं और हाल ही में पाकिस्तान ने ईरान पर हुए इजराइली हमलों की निंदा की है इसलिए ट्रंप यह सुनिश्चित कर रहे थे कि पाकिस्तान ईरान की मदद के लिए आगे नहीं आये। इसके अलावा ट्रंप का एक और गेम प्लान यह था कि वह मुनीर को लंच कराने के दौरान उनकी भेंट भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से करवा दी जाये लेकिन मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति की यह चाल समझ गये थे इसलिए उन्होंने कनाडा से लौटते वक्त अमेरिका में कुछ समय रुकने का उनका आग्रह ठुकरा दिया था। मोदी समझ गये थे कि यदि ट्रंप ने अचानक उनकी और मुनीर की भेंट करवा कर दुनिया के सामने फिर से यह दावा कर दिया कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच सुलह करवा दी है तो उनके लिए घरेलू राजनीतिक मोर्चे पर नई मुश्किल खड़ी हो जायेगी।

जहां तक ट्रंप और मुनीर के लंच की बात है तो बताया जा रहा है कि पहला निवाला मुंह में डालते ही मुनीर के होश उड़ गये क्योंकि वह कट्टरपंथी स्वभाव के हैं इसलिए उन्हें यह बात रास नहीं आई कि वह ईरान का साथ देने की बजाय इजराइल को अपना मिशन पूरा करते हुए देखें। मुनीर को ट्रंप की रोटी खाते ही यह बात समझ आ गयी कि दुनिया में कोई भी फ्री में कुछ नहीं खिलाता। वैसे भी ट्रंप राजनीतिज्ञ कम, व्यापारी ज्यादा हैं और उन्हें पता है कि पाकिस्तान के किसी भी सेनाध्यक्ष को मुंहमांगी कीमत देकर आसानी से खरीदा जा सकता है। यही काम ट्रंप ने किया और मुनीर को अपने पाले में कर लिया। वैसे, अमेरिकी राजनीति के इतिहास में यह दुर्लभ ही नहीं बल्कि अभूतपूर्व घटना है कि कोई अमेरिकी राष्ट्रपति किसी विदेशी सैन्य प्रमुख को लंच पर बुलाए। हालांकि अयूब खान, जिया-उल-हक और परवेज मुशर्रफ जैसे पाकिस्तानी सैन्य नेताओं ने अतीत में अमेरिकी राष्ट्रपतियों से मुलाकात की थी, लेकिन उन्होंने यह मुलाकात तब की थी जब वे सैन्य तख्तापलट के बाद पाकिस्तान के नेता बन गए थे। हम आपको यह भी बता दें कि ज़िया-उल-हक और मुशर्रफ ने भी अमेरिका से अरबों डॉलर की सैन्य सहायता और अनुदान प्राप्त करने के लिए पाकिस्तान को एक ₹किराए की सेना₹ में बदल दिया था।

अमेरिकी मीडिया रिपोर्टों में भी कहा गया है कि ट्रंप की इस पहल को मुनीर को पाकिस्तान का वास्तविक नेता मानने के तौर पर देखा जा रहा है। साथ ही ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिका ईरान में अपने संभावित हमलों के लिए मुनीर का समर्थन प्राप्त करना चाहता है। इसके साथ ही अमेरिका और इजराइल यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि ईरान इस्लामी दुनिया में अलग-थलग रहे और उसे पाकिस्तान का समर्थन नहीं मिले। अमेरिकी मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक ट्रंप की अजीबो-गरीब नीतियों को देखते हुए, यह भी संभव है कि मुनीर को चेतावनी दी गई हो कि अगर इस्लामाबाद ने ईरान का समर्थन किया तो परिणाम भुगतने होंगे। हम आपको बता दें कि पाकिस्तान की सरकार ने इजराइल द्वारा ईरान पर किए गए हमलों की निंदा की है और उन्हें 'ईरान की संप्रभुता का खुला उल्लंघन' और 'अनुचित तथा अवैध आक्रामकता' बताया है।

एक रोचक तथ्य यह भी है कि वैसे तो मुनीर कट्टर इस्लामवादी माने जाते हैं, मगर उनके बारे में अमेरिका में रहने वाले इमरान खान की पीटीआई पार्टी के समर्थकों का आरोप है कि वह इजराइल समर्थक हैं और अमेरिका-इजराइल की ईरान के खिलाफ कार्रवाई का समर्थन कर रहे हैं ताकि पाकिस्तान एकमात्र इस्लामी परमाणु शक्ति बना रहे। हम आपको बता दें कि पीटीआई कार्यकर्ताओं ने ही सबसे पहले मुनीर की अमेरिका में गुप्त यात्रा का खुलासा किया था और आरोप लगाया था कि उन्होंने वॉशिंगटन डीसी में एक इजराइल समर्थक लॉबी समूह एआईपीएसी की बैठक में भाग लिया। उन्होंने उनके अमेरिकी सहयोगी साजिद तारार को 'इजराइल का कट्टर समर्थक और फिलिस्तीनी व ईरानी मुसलमानों का दुश्मन' बताया था। जहां तक ट्रंप और मुनीर के लंच के बाद आये अमेरिकी राष्ट्रपति के बयान की बात है तो आपको बता दें कि उन्होंने कहा है कि ₹मुझे पाकिस्तान से प्यार है₹। साथ ही उन्होंने यह दावा किया है कि मुनीर ने भारत के साथ एक विनाशकारी युद्ध को टाल दिया। ट्रंप ने कहा, मुनीर इस युद्ध को पाकिस्तान की ओर से रोकने में बेहद प्रभावशाली था। यह भी कहा जा रहा है कि मुनीर को अमेरिकी राष्ट्रपति की ओर से लंच का निमंत्रण उस समय आया जब उन्होंने ट्रंप को भारत-पाक परमाणु युद्ध को रोकने के लिए नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किए जाने की सिफारिश की। यह भी बताया जा रहा है कि यह लंच मीटिंग पाकिस्तानी-अमेरिकी व्यवसायी साजिद तारार के प्रयासों से आयोजित हुई, जो ट्रंप के लंबे समय से समर्थक और 'अमेरिकन मुस्लिम्स फॉर ट्रंप' समूह के संस्थापक हैं। तारार पिछले तीन रिपब्लिकन राष्ट्रीय सम्मेलन में वक्ता रहे हैं और उनकी एमएजीए विचारधारा से करीबी के कारण उनके बेटे को ट्रंप के पहले कार्यकाल में स्टेट डिपार्टमेंट में नियुक्ति मिली थी। रिपोर्टों के मुताबिक तारार ने फोर सीजन्स होटल में मुनीर के लिए एक सामुदायिक स्वागत समारोह भी आयोजित किया, जिसमें सेना प्रमुख ने प्रवासी पाकिस्तानियों को पाकिस्तान के 'सच्चे राजदूत' बताया और उनके रेमिटेंस, निवेश और उपलब्धियों के माध्यम से अर्थव्यवस्था और वैश्विक छवि में योगदान की सराहना की।

बहरहाल, पाकिस्तान को अपने पहले कार्यकाल में 'धोखेबाज' और 'आतंकवादियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह' कहने वाले ट्रंप का आतंकी देश के प्रति अचानक यू-टर्न पूरी दुनिया को चौंका रहा है। लेकिन सब यह भी समझ रहे हैं कि अमेरिका इस समय पाकिस्तान का उपयोग करना चाह रहा है। अमेरिका में तो ट्रंप के इन पैतरों का विश्लेषण भी शुरू हो गया है। राष्ट्रीय सुरक्षा विश्लेषक डेरेक ग्रॉसमैन ने कहा, यह काफी हैरानी वाली बात है कि ट्रंप ने मोदी को चुपचाप व्हाइट हाउस आमंत्रित करने की कोशिश की जब असीम मुनीर भी वहां लंच के लिए मौजूद थे। उन्होंने कहा कि ट्रंप को भारत-पाकिस्तान तनावों की पृष्ठभूमि और इतिहास की कोई समझ नहीं है, वह बस एक फोटो खिंचवाना चाहते हैं ताकि बाद में नोबेल पुरस्कार मिल सके।

काश आज सद्दाम होते...ऐसा शख्स जिसने इजरायल पर मिसाइल दाग उस जगह ही मस्जिद बनवा दी

जंग इजरायल और ईरान के बीच छिड़ी है। लेकिन इस वक्त एक ऐसे किरदार की चर्चा तेज हो चली है जिसे कुछ लोग नायक मानते हैं और कुछ लोग खलनायक। लेकिन एक बात तो है कि उसकि जिंदगी ने दुनिया को हिला कर रख दिया था और इसी वजह से दुनिया में उसको लेकर राय बंटी हुई है। उसकी मौत पर अमेरिकी भी रोने वाले हैं तो उसके जीते जी अमेरिकी ही दुश्मन हैं। सद्दाम का नाम सुनते ही किसी को बहादुर नेता की छवि याद आती है तो किसी को एक बेरहम तानाशाह की। वो आदमी जिसने इजरायल पर मिसाइलें दागी और जिस जगह से मिसाइलें छोड़ी गई वहीं पर मस्जिद बनवा दिया। कुछ लोग उसे अरब की शान कहते हैं, जिसने पश्चिमी ताकतों को खुली चुनौती दी। वो शख्स जिसने अपने खून से कुरान लिखवाकर धार्मिक जुनून का सबूत दिया। वो शख्स जिसने जब अपने देश की बागडोर संभाली तो अपने देश में विकास के लिए खूब काम किया। लेकिन एक दूसरा पहलू उसे निर्दलीय तानाशाह भी बनाता है। सत्ता के लिए उसने निर्दोष लोगों की जान ली। उसने लोगों के दिलों में डर पैदा किया। विरोध करने वालों को मरवा दिया। इराक, जिसे कभी पश्चिमी एशिया का पावर सेंटर माना जाता था, आज एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जहां उसकी जमीन और आसमान दूसरों के युद्धों का गलियारा बन चुके हैं। वहीं उसके सबसे बड़े नेता का जिक्र इजरायल और ईरान की जंग के दौरान भी देखने को मिला है।

दूसरों के युद्धों का गलियारा बना इराक का आसमान

इजरायल के रक्षा मंत्री इजरायल कैट्ज ने चेतावनी दी कि ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई का हश्र इराक के पूर्व तानाशाह सद्दाम हुसैन जैसा हो सकता है। कैट्ज ने समाचार एजेंसी रॉयटर्स से कहा, याद रखें कि पड़ोसी देश ईरान के तानाशाह का क्या हुआ था, जिसने इजरायल के खिलाफ यह रास्ता अपनाया था। खामेनेई के भाग्य को सद्दाम हुसैन से जोड़ने वाली कैट्ज की चेतावनी को अत्यधिक आवेशपूर्ण बयान माना जा सकता है, जो यहूदी राज्य और उसके कट्टर प्रतिद्वंद्वी तेहरान के बीच बढ़ती दुश्मनी को दर्शाता है। 2003 में अमेरिका के नेतृत्व वाले आक्रमण के बाद सद्दाम हुसैन को उखाड़ फेंका गया और मार डाला गया, जो उनके शासन के पूर्ण पतन का प्रतीक था। इजरायल के कट्टर दुश्मन सद्दाम हुसैन की मौत के बाद उनके देश में बिना परमिशन के ही हवाई जहाजों का आवागमन आम हो चला है। 12 जून की सुबह, जब इजराइली लड़ाकू विमान ने ऑपरेशन राइजिंग लायन के तहत ईरान के ईरान के इस्फहान और नतांज में सैन्य ठिकानों पर हमला किया तो इराकी हवाई क्षेत्र से बिना अनुमति के ही गुजरकर ये स्ट्राइक किया। तब बगदाद, बसरा, मोसुल और एरबिल के लोग घबराए हुए थे। यह कोई पहला मौका नहीं था, बल्कि बीते कुछ हफ्तों में कई बार सुबह और शाम के समय इन शहरों में साउंड की गति से तेज उड़ने वाले जेट विमानों की आवाजें गूंजी हैं। बसरा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास धमाकों की आवाज तक सुनी गई। लेकिन हैरानी की बात है कि इराक की सरकार न तो जेट व मिसाइलों को रोक पा रही है, न कोई विरोध दर्ज करा पा रही है। नतीजतन, जनता का गुस्सा चरम पर है। सोशल मीडिया पर 'काश सद्दाम होता', 'हमारे आसमां हमारे नहीं' जैसे ट्रेंड्स वायरल हैं।

सद्दाम हुसैन की सरकार जाने के बाद शिया-सुन्नी के बीच सत्ता का बंटवारा

इराक की बहुसंख्यक आबादी शिया ही है। जब तक सद्दाम हुसैन इराक की सत्ता में रहे तब तक यहां शिया हाशिए पर रहे। सद्दाम हुसैन सुन्नी मुसलमान थे। लेकिन 2003 के बाद से अब तक इराक के सारे प्रधानमंत्री शिया मुसलमान ही बने और सुन्नी हाशिए पर होते गए। 2003 से पहले सद्दाम हुसैन के इराक में सुन्नियों का ही वर्चस्व रहा। सेना से लेकर सरकार तक में सुन्नी मुसलमानों का बोलबाला था। सद्दाम के दौर में शिया और कुर्द हाशिए पर थे। इराक में शिया 51 फीसदी हैं और सुन्नी 42 फीसदी हैं। 2003 के बाद, ईरान समर्थित मिलिशिया जैसे हिजबुल्लाह ब्रिगेड्स और कटाइब सैयद अल-शुहदा का इराक में उदय हुआ। अब इन मिलिशिया गुटों में एक लाख से ज्यादा लड़ाके हैं। आरोप है कि इन्हें ईरान से ड्रोन्स, रकिट्स और बैलिस्टिक मिसाइलें मिलती हैं। राजनीतिक प्रभाव को देखें तो मिलिशिया से जुड़े नेता संसद में 50 से ज्यादा सीटें रखते हैं। कई इराकी इन मिलिशियाओं को विदेशी हमलों से सुरक्षा की उम्मीद मानते हैं, लेकिन कई उनकी हिंसा से डरते भी हैं।

अमेरिका ने इराक में सद्दाम को हटा अपने लोग बिठाए?

20 मार्च ही वो तारीख है, जब इराक में जैविक हथियार होने के शक की बुनियाद पर करीब 20 साल पहले अमेरिकी राष्ट्रपति बुश ने युद्ध की शुरूआत की थी। ये वो दौर था जब आदेश के साथ ही अमेरिकी नौसेना की क्रूज मिसाइलों ने इराक की राजधानी बगदाद में कई जगहों पर हमले किए। बगदाद शहर बम और हवाई हमलों की आवाज से गूंज रहा था और इसके साथ ही सद्दाम हुसैन के लंबे शासन का अंत होने जा रहा था। सिर्फ 21 दिनों में अमेरिका ने इराक के तमाम बड़े शहरों को अपने कब्जे में ले लिया था, लेकिन सद्दाम हुसैन अमेरिका की पकड़ से दूर था। 13 दिसंबर, 2003 में अमेरिका को सद्दाम हुसैन को पकड़ने में कामयाबी मिली। पांच सप्ताह के युद्ध के बाद राष्ट्रपति बुश ने 1 मई, 2003 को अपना 'मिशन अकंप्लिश' भाषण दिया। सद्दाम की सरकार गई और इराक पर कब्जा हुआ इसके बाद अमेरिका ने कोएलिशन प्रोविजनल अथॉरिटी बनाई, जिसने इराकी संसाधनों और नीतियों पर नियंत्रण किया। वर्तमान सरकार को अमेरिका और ईरान दोनों का समर्थन है, लेकिन जनता इसे कठपुतली मानती है।

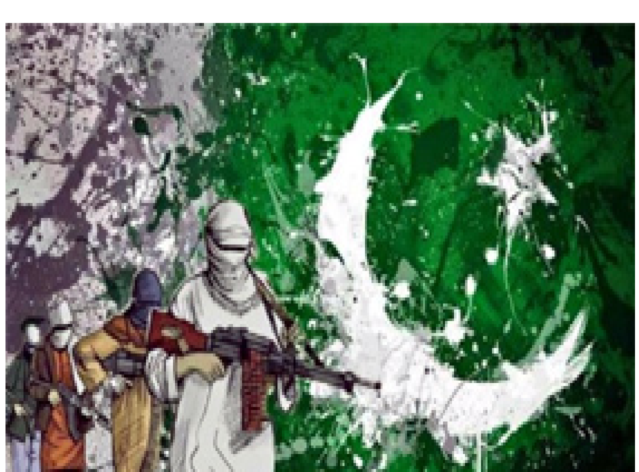
इराक आक्रमण ने दुनिया को कैसे बदल दिया?

आक्रमण के न केवल इराक बल्कि दुनिया के लिए भी दूरगामी परिणाम थे। सबसे महत्वपूर्ण रूप से, इसने उन परिस्थितियों को जन्म दिया जिसमें आतंकवादी इस्लामिक स्टेट का जन्म हुआ, जिसने 2014 में अपनी ₹खिलाफत₹ की घोषणा की और देश में क्रूर और लंबे समय तक सांप्रदायिक गृहयुद्ध को जन्म दिया। संघर्ष ने पश्चिम एशिया में अमेरिका के प्रभाव को भी कम कर दिया। आक्रमण से पहले, इराक और अफगानिस्तान ने बफर के रूप में कार्य किया जिसने पश्चिम एशिया में ईरानी प्रभाव को कम कर दिया। इराक में आक्रमण के बाद की अराजकता में ईरान ने एक मुकाम हासिल किया और राष्ट्रपति बशर अल-असद के सीरियाई शासन को सैनिकों की आपूर्ति, और सशस्त्र और वित्तपोषण सहित अपनी सीमाओं के बाहर अपने सैन्य अभियानों को बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय शक्ति के बदले हुए संतुलन का उपयोग किया। आक्रमण ने रणनीति के रूप में ड्रोन हमलों के युग की शुरूआत की।

वैश्विक स्तर पर भारत के विरुद्ध पुनः गढ़े जा रहे झूठे विमर्श

वैश्विक स्तर पर आर्थिक जगत में भारत का उदय कुछ देशों को रास नहीं आ रहा है। विकसित देशों के बीच पूरे विश्व में भारत आज सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बना हुआ है। जापान, ब्रिटेन, फ्रांन्स, इटली आदि देशों से आगे निकलते हुए भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और शीघ्र ही लगभग एक वर्ष के बाद जर्मनी को पीछे छोड़ते हुए भारत के विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के आसार भी अब स्पष्टतः दिखाई दे रहे हैं। भारत एक ओर अतिआधुनिक तकनीकि के आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स एवं डाटा सेंटर जैसे क्षेत्रों में पूरे विश्व का नेतृत्व करता हुआ दिखाई दे रहा है तो दूसरी ओर वित्तीय क्षेत्र में ऑनलाइन व्यवहारों के मामले में भी भारत आज कई देशों का मार्गदर्शन करता हुआ दिखाई दे रहा है। कुल मिलाकर भारत आज लगभग प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनते हुए विश्व के अन्य देशों पर अपनी निर्भरता को कम करता जा रहा है। भारत के विकास की यह गति एवं राह कुछ देशों को बिलकुल उचित नहीं लग रही है एवं वे वैमनस्य का भाव पालते हुए भारत के विरुद्ध एक बार पुनः कुछ झूठे विमर्श गढ़ने का प्रयास कर रहे हैं।

हाल ही में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा जारी की गई एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 2,730 अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है, जबकि बांग्लादेश में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 2,870 अमेरिकी डॉलर है। इस प्रकार, भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में बांग्लादेश जैसे छोटे देश से भी पीछे है। अतः यह झूठा विमर्श गढ़ने का प्रयास किया जा रहा है भारत में किस प्रकार का आर्थिक विकास हो रहा है जिससे भारतीय नागरिकों की आय तो उतनी तेजी से नहीं बढ़ पा रही है, जिस तेजी से भारत का आर्थिक विकास होता हुआ दिखाई दे रहा है। आंकड़ों का उचित तरीके से विश्लेषण न करते हुए भारत के संदर्भ में गलत जानकारी देने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि किसी भी मामले में तुलना दो आमों के बीच ही सम्भव है आम एवं संतरे के बीच तुलना कैसे सम्भव है। भारत की जनसंख्या 140 करोड़ है, जबकि बांग्लादेश की जनसंख्या केवल 17 करोड़ से कुछ ही अधिक है। भारत एक विशाल देश है जिसमें 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या आज भी गावों में निवास करती है। भारत में 28 राज्य एवं 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं। बांग्लादेश, भारत के सामने एक पिद्दी सा देश है। यदि तुलना करनी ही हो तो भारत की तुलना चीन से की जा सकती है। इसी प्रकार, बांग्लादेश की तुलना स्विट्जरलैंड, नीदरलैण्ड, स्वीडन आदि जैसे छोटे देशों से की जा सकती है। स्विट्जरलैंड में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 99,564 अमेरिकी डॉलर; नीदरलैण्ड में 64,572 अमेरिकी डॉलर एवं स्वीडन में 55,516 अमेरिकी डॉलर प्रति व्यक्ति है। ब्रिटेन ने जब भारत में अपनी सत्ता को छोड़ा था अर्थात भारत ने वर्ष 1947 में जब राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त की थी तब भारत की 70 प्रतिशत से अधिक आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही थी, परंतु आज केवल 4 से 4.5 प्रतिशत भारतीय ही गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। जबकि, बांग्लादेश में लगभग 19 प्रतिशत नागरिक गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने को मजबूर हैं। भारत के सकल घरेलू उत्पाद का आकार आज 4.19 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के आंकड़े को पार कर गया है जबकि बांग्लादेश के सकल



घरेलू उत्पाद का आकार केवल लगभग 46,700 करोड़ अमेरिकी डॉलर का है। सकल घरेलू उत्पाद को देश की कुल जनसंख्या से बांट कर ही प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़े को प्राप्त किया जा सकता है। भारत की जनसंख्या 140 करोड़ से अधिक है जबकि बांग्लादेश की जनसंख्या मात्र 17 करोड़ है। इससे प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का आंकड़ा बांग्लादेश की तुलना में कुछ कम हो जाता है। भारत में पिछले कुछ वर्षों के दौरान बहुत संतुलित विकास हुआ है। भारत में न केवल धनाडयों की संख्या में अपार वृद्धि दर्ज हुई हे बल्कि गरीबी उन्मूलन पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है जिससे गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले नागरिकों की संख्या में भी अतुलनीय कमी दर्ज हुई है।

बांग्लादेश की तुलना में भारत एक विशाल देश है एवं भारत के कई राज्यों यथा महाराष्ट्र, गुजरात एवं तमिलनाडु आदि का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद बांग्लादेश की तुलना में दुगने से तिगुने आकार का है। इसी प्रकार, भारत के राज्य अभी भी कुछ पिछड़े राज्यों की श्रेणी में शामिल है, जैसे, बिहार, झारखंड आदि। परंतु किसी भी देश के प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का औसत निकालते समय देश के समस्त राज्यों के आंकड़ों को शामिल करना होता है। इस कारण से भी भारत में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का औसत कुछ कम हो जाता है।

हाल ही के समय में एक और कुतर्क दिया जा रहा है कि भारत में तेज गति से हो रही आर्थिक प्रगति के बीच भी बच्चों की जन्म-मृत्यु की दर अफ्रीकी देशों के समान बनी हुई है। इस प्रकार का झूठा विमर्श गढ़ते समय संभवतः वास्तविक स्थिति की ओर ध्यान ही नहीं दिया गया है। रजिस्ट्रार जनरल आफ इंडिया की एसआरएस रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 1,000 शिशुओं के जन्म के बीच शिशुओं की जन्म-मृत्यु दर केवल 26 है। जबकि अफ्रीकी देशों यथा नाईजीरिया में 67, कांगो में 62 एवं ईथियोपिया में 34 है। इन सभी अफ्रीकी देशों की तुलना में भारत में शिशुओं की जन्म-मृत्यु दर कम है। अतः भारत अब अफ्रीकी देशों से इस मामले में बहुत आगे निकल आया है। हां, इस संदर्भ में भारत की तुलना यदि विकसित देशों से की जाएगी यथा अमेरिका में 5 एवं जापान में 2, तब जरूर भारत में इस स्थिति को अभी और अधिक सुधारने की आवश्यकता है, जिसके लिए केंद्र सरकार लगातार प्रयास कर रही है। विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार बहुत तेज गति से किया जा रहा है। जिला स्तर पर मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की जा रही है। भारत में इस संदर्भ में क्षेत्रीय विषमता भी दिखाई देती है। जैसे, केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली जैसे विकसित राज्यों में शिशुओं के जन्म के बीच जन्म-मृत्यु दर 10-15 के बीच ही है, जबकि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं बिहार जैसे राज्यों में यह 40-50 के बीच बनी हुई है। हालांकि धीमे धीमे इन राज्यों में भी तेजी से सुधार दृष्टिगोचर है। देश में संस्थागत प्रसव की दर में सुधार हुआ है, परंतु जननी सुरक्षा, पोषण एवं टीकाकरण के क्षेत्रों में विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में अभी भी प्रयासों को गति दी जा रही है। इसी प्रकार, ग्रामीण इलाकों में अति पिछड़े परिवारों (विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति के क्षेत्रो में) के बीच गंदे पानी का उपयोग, कुपोषण, प्रसव के पूर्व की देखभाल में कमी के चलते शिशुओं के जन्म के बीच जन्म-मृत्यु दर को अभी और कम किया जाना शेष है। भारत में हालांकि स्वास्थ्य सेवाओं में तेजी से सुधार हुआ है, पर कुछ राज्यों पर अभी भी विशेष ध्यान केंद्रित कर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' नीति से स्वास्थ्य सेवाओं को संतुलित किया जा रहा है।

एक तीसरा झूठा विमर्श और खड़ा किया जा रहा है कि जब भारत आर्थिक प्रगति के पथ पर तेज गति से दौड़ रहा है तो फिर 80 करोड़ नागरिकों को मुफ्त अनाज क्यों उपलब्ध कराया जा रहा है? तथ्यात्मक रूप से यह सही है कि भारत में ह्लप्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजनाह्व के अंतर्गत भारत में केंद्र सरकार द्वारा देश के 80 करोड़ नागरिकों को 5 किलो मुफ्त राशन प्रति माह उपलब्ध कराया जा रहा है। दरअसल, भारत में अभी भी गरीबी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुई है। सरकार का यह परम कर्तव्य है कि वह अपने नागरिकों को पर्याप्त मात्रा में भोजन उपलब्ध करवाए। कोरोना महामारी के खंडकाल में देश के नागरिकों पर आई प्राकृतिक आपदा के चलते करोड़ों की संख्या में नागरिकों ने अपने रोजगार खोए थे तथा इस गम्भीर समय में केंद्र सरकार ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए देश के गरीब नागरिकों को उक्त योजना के अंतर्गत खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना प्रारम्भ किया था, जो आज भी जारी है। दरअसल इसी योजना के चलते भारत में आज लाखों परिवार गरीबी रेखा से ऊपर उठकर मध्यम श्रेणी परिवार की श्रेणी में शामिल हो गए हैं एवं देश के आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। कोरोना महामारी के खंडकाल में मंहगाई एवं बेरोजगारी के दौर में देश के नागरिकों को आजीविका की गारंटी देना आवश्यक था। जब तक देश के समस्त परिवार आत्मनिर्भर नहीं जो जाते तब तक इसे एक ट्रैंजीशनल सिक्यूरिटी नेट माना जा सकता है। हां, आगे आने वाले 3-5 वर्षों के दौरान इस योजना के अंतर्गत शामिल नागरिकों की संख्या को कम जरूर किया जाना चाहिए क्योंकि जो परिवार अब गरीबी रेखा से ऊपर उठकर मध्यम श्रेणी परिवार की श्रेणी में शामिल हो गए है, ऐसे परिवारों को उक्त योजना का लाभ अब बंद किया जाना चाहिए।

साइप्रस यात्रा के जरिए तुर्की को कूटनीतिक जवाब

ऑपरेशन सिंदूर के बाद एक टीवी चैनल के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी से पूछा गया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर भारत की कार्रवाई इतनी सटीक क्यों रही? पाकिस्तान की खुफिया सेवा इसे भांप क्यों नहीं पाई, पाकिस्तानी राजनेता और सेना क्यों भारतीय कार्रवाई का अंदाजा नहीं लगा पाए। सवाल खत्म होते ही प्रधानमंत्री ठठाकर हंस पड़े। हंसते हुए उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी सेना और राजनीति भारत के विपक्षी दलों की ही तरह हैं। जिस तरह वे मेरे बारे में अंदाजा नहीं लगा सकते, कुछ उसी तरह पाकिस्तानी भी अंदाजा नहीं लगा सकते।

दिल्ली में केंद्रीय सत्ता संभालने के बाद प्रधानमंत्री मोदी के कदमों को देखिए। हर बार वे चौंकाते रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर के बाद जब समूचा विपक्ष भारत सरकार की विदेश नीति की नाकामी को लेकर मोदी सरकार पर निशाना लगा रहा था, प्रधानमंत्री ने साइप्रस की यात्रा करके देश को चौंका दिया है। भूमध्य सागर के द्वीपीय देश साइप्रस की यात्रा का अचानक से ऐलान होना और कनाडा जाते हुए रास्ते में प्रधानमंत्री मोदी का साइप्रस उतरना और वहां के शीर्ष नेताओं से मिलना भारतीय विदेश नीति का चौंकाऊं फैसला ही है। देश के शीर्ष नेताओं की विदेश यात्राएं अरसा पहले से तय होती हैं, उसकी जानकारी राजनीति के साथ ही पत्रकारिता को भी होती है। लेकिन प्रधानमंत्री की साइप्रस यात्रा अचानक से हुई है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने प्रधानमंत्री की साइप्रस यात्रा का 14 मई को अचानक ऐलान किया। साइप्रस की राजधानी निकोसिया में प्रधानमंत्री मोदी ने वहां के राष्ट्रपति निक- ोस क्रिस्टोडौलाइड्स से बातचीत भी की। ऐसे में सवाल यह उठ सकता है कि साइप्रस की यह अचानक यात्रा क्यों ? इस सवाल के जवाब में एक बार फिर ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हुई घटनाओं की ओर लौटना होगा। याद कीजिए, तब पाकिस्तान ने भारत पर ड्रोन के जरिए सैकड़ों हमले किए थे। उन हमलों को बेशक भारत के एयर डिफेंस सिस्टम ने नाकाम कर दिया। साइप्रस की यात्रा के लिए हमें उन हमलों में इस्तेमाल हुए ड्रोन को देखना होगा। पाकिस्तान ने जिन ड्रोन से हमले किए, ज्यादातर तुर्की में बने सोनगार ड्रोन थे। हवाई हमलों में तुर्की के इन ड्रोन को बेहद



मारक माना जाता है। हालांकि वे भारतीय एयर डिफेंस सिस्टम के सामने बेकार ही साबित हुए। कूटनीतिक हलकों को पता है कि तुर्की के राष्ट्रपति रेचेप तैय्यप अर्दोआन ने पाकिस्तान को उपलब्ध कराया। अर्दोआन ने पर्दे के पीछे से पाकिस्तान का साथ दिया। इतना ही नहीं, भारत ने जब इस बात को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने रखा तो अर्दोआन ने ट्वीटर पर ह्यपाकिस्तान-तुर्की दोस्ती जिंदाबादह्न लिखकर एक तरह से भारत के आरोप को साबित कर दिया। इसे भारत को मुंह चिढ़ाना भी कह सकते हैं। यह उस तुर्की का कदम था, जिसे भारत ने दो साल पहले दिल खोलकर मानवीय आधार पर सहयोग दिया था। छह फरवरी 2023 को तुर्की में 7.8 तीव्रता का भूकंप आया था, उस झटके में तुर्की में 53 हजार लोगों की मौत हो गई थी, हजारों लोग घायल हो गए थे। जान-माल के भारी नुकसान के बाद भारत ने मानवीय सहायता के साथ ही विशेषज्ञों की टीम के साथ बचाव दल भेजा था। राहत के तुर्की पहुंचने वाली टीमों में भारत की टीम भी शामिल थी। तुर्की के राष्ट्रपति ने जब ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान से दोस्ती को जगजाहिर किया तो उसे भारत के लोगों ने भारत के लिए मुंह चिढ़ाना माना। रही-सही कसर पूरी हुई मई के आखिर में पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ की तुर्की की यात्रा से। तब भारत के सामने अर्दोआन के रूख को लेकर कोई गुंजाइश ही नहीं रही। तुर्की को लेकर भारतीय समुदाय की सोच अब भी ऐसी ही है। ऐसा नहीं कि पहली बार तुर्की ने भारत के खिलाफ पाकिस्तान का पक्ष लेते हुए ऐसा कदम उठाया है। संयुक्त राष्ट्र संघ समेत कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान के पक्ष में अर्दोआन सहयोगी भूमिका पेश करते रहे हैं। इन वजहों से तुर्की को लेकर भारत में गुस्सा भी बहुत रहा है। कश्मीर के मसले पर तुर्की हर बार पाकिस्तान के साथ ही खड़ा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी का साइप्रस दौरा भारत के उसी गुस्से की अभिव्यक्ति और भारत को मुंह चिढ़ाने के अर्दोआन के प्रयासों का जवाब माना जा सकता है। इसकी वजह है कि साइप्रस और तुर्की के बीच जारी बरसों पुराना विवाद। साइप्रस में यूनानी और तुर्की मूल के लोग रहते हैं। तुर्की के दोनों समुदायों में नस्ली आधार पर विवाद रहा है। साइप्रस में साल 1974 में तत्कालीन सरकार के खिलाफ यूनानी मूल के आतंकी समूहों ने तख्तापलट की कोशिश की। इसे तुर्की ने अपने लोगों के खिलाफ युद्ध माना। इसके बाद तुर्की ने साइप्रस पर हमला कर दिया। इस दौरान तुर्की की सेनाओं ने साइप्रस के दूसरे नंबर के मशहूर शहर वरोशा पर कब्जा कर लिया। यह शहर अपने बहुमंजिला भवनों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहां पूरे साल सैलानी आते रहते थे। लेकिन जब से तुर्की के कब्जे में यह शहर है, सैलानियों के लिए तरस रहा है। तुर्की की सेना के 35 हजार जवान यहां तैनात हैं। इस-के बाद से एक तरह से यह द्वीपीय देश दो हिस्सों में बंट गया है। तुर्की के कब्जे वाले इलाके को तुर्की ने राष्ट्र का दर्जा दे रखा है। दिलचस्प है कि इस राष्ट्र के अस्तित्व को तुर्की के अलावा कोई देश स्वीकार नहीं करता। साइप्रस यूरोपीय संघ का भी सदस्य है और एक जनवरी 2026 से वह संघ का अध्यक्ष बनने जा रहा है। भारत और यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौते को लेकर बातचीत चल रही है। भारत को उम्मीद है कि साइप्रस के अध्यक्ष रहते यूरोपीय संघ और भारत के बीच मुक्त व्यापार समझौता हो जाएगा। साइप्रस ने कई मौकों पर भारत की संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट की दावेदारी का समर्थन कर चुका है।

मोदी ने साइप्रस जाकर दो संदेश देने की कोशिश की है। पहला संदेश तुर्की के लिए है। भारत ने जता दिया है कि वह साइप्रस को सहयोग देगा और साइप्रस से सहयोग लेगा। वैसे भी साइप्रस के आईटी उद्योग और पर्यटन में भारत के हजारों लोग कार्यरत हैं। साइप्रस स्थित भारतीय हाईकमीशन के मुताबिक साइप्रस में साढ़े ग्यारह हजार लोग रहते हैं। मोदी की साइप्रस यात्रा का दूसरा संदेश भारतीयों के लिए है। पहले भारत से बहुत सारे सैलानी तुर्की जाते थे, लेकिन अब वे साइप्रस जाएंगे। वैसे पाकिस्तान के सहयोग के खुलासे के बाद से ही तुर्की के लिए बुक टिकटों को भारतीयों ने कैंसल कराना शुरू कर दिया था। मोदी की कोशिश साइप्रस को बढ़ाकर तुर्की की आर्थिक रीढ़ पर चोट पहुंचाना है। साथ ही तुर्की को संदेश देना है कि जरूरत पड़ने पर भारत तुर्की के खिलाफ कड़े कदम भी उठा सकता है।

प्रधानमंत्री ने कनाडा जाते हुए साइप्रस की यात्रा से तुर्की को भी चौंकाया है। तुर्की के राष्ट्रपति अर्दोआन ने 2021 में कहा था कि साइप्रस की जिम्मेदारी तुर्की की है। यानी एक तरह से वह साइप्रस के एकीकरण के संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्ताव के खिलाफ हैं। हालांकि अर्दोआन के कदम का इजरायल कड़ा विरोध करता है। साइप्रस की मौजूदा सरकार के साथ इजरायल मजबूती से खड़ा है। जाहिर है कि तुर्की के कदम का इजरायल विरोध कर रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री की साइप्रस की यात्रा के बाद इजरायल, भारत और साइप्रस संबंधों को भी गति मिलने की संभावना है। दुनिया इन दिनों चीन के ह्यवन बेल्ट-वन रोडह्न के जवाब में मध्य पूर्व के देशों के साथ यूरोप ह्यइंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोरह्न यानी आईएमईसी पर काम कर रहा है। भारत की साइप्रस यात्रा इस कॉरीडोर में भारत की संभावनाओं की भी खोज करती है। साइप्रस जाने वाली पहली भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी रहीं, जिन्होंने 1983 में इस देश का दौरा किया था, इसके उन्नीस साल बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने साइप्रस की यात्रा की थी। इसके 23 साल बाद मोदी की यात्रा हो रही है। यह यात्रा तुर्की को जवाब भी है और भारत की यूरोपी संघ से सीधे कारोबारी संपर्क की कोशिश भी।

इजरायल के ईरान पर रणनीतिक हमले के वैश्विक मायने

एक और युद्ध का आगाज हो गया। इससे हथियार निमार्ता कम्पनियों की बाछें पुनः खिल गई। कहते हैं कि मरता क्या नहीं करता? आखिरकार बत्तीस दांतों के बीच घिरी जिह्वा की तरह मुस्लिम देशों से घिरे एकमात्र यहूदी मुल्क इजरायल ने अपने रणनीतिक हिफाजत के लिए मुस्लिम वर्ल्ड के सरगना देश ईरान पर निर्णायक हमला बोल दिया है, ताकि उसके परमाणु कार्यक्रमों पर ब्रेक लगाकर संभावित परमाणु हमलों से इजरायल के भविष्य की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

समझा जाता है कि ईरान की बार-बार की बन्दरघुड़की का इजरायल ने करारा जवाब दिया है। इस्राइल ने ईरान के 'परमाणु कार्यक्रम ठिकानों' पर अचानक हमला करके न केवल सबको चौंका दिया है बल्कि इस पूरे क्षेत्र को एक बार फिर से अनिश्चितता के जद्दोजहद में धकेल दिया है। इससे महंगाई और बबार्दी दोनों बढ़ेगी। वहीं, गुटीय युद्ध से बचने के लिए अमेरिका ने तत्काल यह साफ किया है कि इस कार्रवाई में वह शामिल नहीं है। वहीं, अब यह भी लगभग तय माना जा रहा है कि रूस और चीन की रजामंदी के बाद ईरान भी पुरजोर जवाबी कार्रवाई करेगा। इससे तीसरा विश्वयुद्ध भी भड़क सकता है।

दरअसल, इजरायल ने ईरान के खिलाफ अपनी कार्रवाई को ऑपरेशन राइजिंग लायन नाम दिया है, जो बताता है कि यह अपने आप में महज एक कार्रवाई नहीं बल्कि नया सिलसिला हो सकता है। हमलों का व्यापक रूप भी इसकी गंभीरता को स्पष्ट कर देता है। यह हमला भारत द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ छेड़े गए ऑपरेशन सिंदूर की कार्रवाई जैसा है, लेकिन अपने दृढ़ संदेश में ऑपरेशन राइजिंग लायन एक मजबूत संदेश देता है, जिससे इस्लामिक देशों की चूलें हिल चुकी हैं। वहीं, ईरान ने भी यह माना है कि इन हमलों में उसके कम से कम छह परमाणु वैज्ञानिक मारे गए। यही नहीं, ईरान के सबसे बड़े सैन्य अधिकारी इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स कॉप्स के चीफ हुसैन सलामी के भी मारे जाने की खबर है। इससे ईरान ने जवाबी कार्रवाई का इरादा भी जता दिया है। वहीं, इस्राइली कार्रवाई के वैश्विक दुष्प्रभावों का संकेत इसी एक तथ्य से मिल जाता है कि पहले हमले के कुछ घंटों के अंदर अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें 13% बढ़ गई। जबकि कुछ शेयर बाजार रॉकेट की तरह भागे, और कुछ धराशायी हो गए। इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस्राइल लंबे समय से कहता रहा है



एक और युद्ध का आगाज हो गया। इससे हथियार निमार्ता कम्पनियों की बाछें पुनः खिल गई। कहते हैं कि मरता क्या नहीं करता? आखिरकार बत्तीस दांतों के बीच घिरी जिह्वा की तरह मुस्लिम देशों से घिरे एकमात्र यहूदी मुल्क इजरायल ने अपने रणनीतिक हिफाजत के लिए मुस्लिम वर्ल्ड के सरगना देश ईरान पर निर्णायक हमला बोल दिया है, ताकि उसके परमाणु कार्यक्रमों पर ब्रेक लगाकर संभावित परमाणु हमलों से इजरायल के भविष्य की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

कि ईरान को परमाणु हथियार विकसित करने से हर हाल में रोका जाए और जरूरी हो तो उसके लिए बल प्रयोग से भी हिचका न जाए। क्योंकि उसका यह कहना है कि ईरान इस स्थिति में आ गया था कि कुछ दिनों के अंदर ही वह 15 परमाणु बम बना सकता था। जो इजरायल के खिलाफ ही उपयोग होता। ऐसे में उसने निर्णायक हमले किए।

यह बात दीगर है कि इस्राइल के इन आरोपों की स्वतंत्र तौर पर पुष्टि नहीं हुई है। वहीं यह बात भी सत्य है कि इस मसले पर अमेरिका से ईरान की बातचीत चल रही थी। 15 जून रविवार को भी दोनों पक्षों में अगले दौर की वार्ता होनी थी। ऐसे में इस्राइल की अचानक की गई इस कार्रवाई के बाद सभी पक्षों की नजरें इस पर टिक गई हैं कि आगे घटनाक्रम कैसा रूप लेता है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि ईरान की जवाबी कार्रवाई का स्वरूप कैसा और उसका दायरा कितना बड़ा होता है। क्या वह खुद को इस्राइल के खिलाफ सांकेतिक कार्रवाई तक सीमित रखता है या फिर अमेरिकी दूतावासों व अन्य ठिकानों को भी अपनी जद में लेता है या होरमुज की खाड़ी से गुजरते जहाजों को भी निशाना बनाता है जहां से 21% ग्लोबल तेल की सप्लाई होती है।

गौरतलब है कि इजरायली हमले के बाद वहां के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि इजरायल ने ईरान की मुख्य संवर्धन सुविधा, परमाणु विज्ञानियों और बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम को निशाना बनाया। उन्होंने ईरान पर हमले के बाद यह साफ कर दिया कि ऑपरेशन राइजिंग लॉयन अभी खत्म नहीं हुआ है। इजरायली हमले में ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के प्रमुख हुसैन सलामी के मारे जाने की पुष्टि हुई है। वहीं, अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने कहा कि ईरान पर हुए इजरायली हमलों में अमेरिका शामिल नहीं है। साथ ही उन्होंने तेहरान को अमेरिकी हितों और कर्मियों को निशाना बनाने के खिलाफ चेतावनी दी। जबकि इजरायली रक्षा अधिकारी ने दावा किया कि हमलों में ईरान के चीफ ऑफ स्टाफ जनरल मोहम्मद बाघेरी और उनके कई शीर्ष सैन्य अधिकारी मारे जा चुके हैं।

ईरान पर इजरायली हमले के बाद अमेरिका ने एक आपात बैठक बुलाई। डोनाल्ड ट्रंप की अध्यक्षता में यह बैठक हुई। इसमें अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए आगे की एहतियाती रणनीति तय की गई। चूंकि तेहरान में हुए धमाकों के बाद इराक और ईरान ने अपना एयरस्पेस बंद कर दिया है। इससे वैश्विक वायुयान सेवाओं पर भी असर पड़ना लाजिमी है। वहीं, इजरायल ने ईरान में हमले के बाद देशभर में इमरजेंसी लागू की। इसके अलावा इस्राइल ने दुनिया भर में अपने दूतावास बंद करने का एलान किया है। साथ ही इस्राइल ने अपने नागरिकों से सतर्क रहने और सार्वजनिक स्थानों पर यहूदी या इस्राइली प्रतीक न दिखाने की अपील की है।

मालूम हो कि विगत कई दशकों से गाजा पट्टी में इजरायल के खिलाफ संघर्षरत फिलिस्तीनियों और हमास के आतंकियों को जहां ईरान, सीरिया, जॉर्डन आदि मुस्लिम देश खुला समर्थन दे रहे हैं, वहीं पाकिस्तान-तुर्किये-अजरबैजान जैसे कुख्यात मुस्लिम देश भी उन आतंकियों को गुप्त शह प्रदान कर रहे हैं। लिहाजा इजरायल ने अब तय कर लिया है कि उसके खिलाफ षड्यंत्र में शामिल मुस्लिम देशों को अब बारी-बारी से भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। शायद इसलिए इजरायल ने अब ऐसे मुल्कों की जड़ों पर ही हमला बोलने का निश्चय किया है, जिसकी खौंफनाक शुरूआत भी कर दी है। जिसके बाद पश्चिम एशिया के दो कट्टर विरोधियों के बीच एक व्यापक युद्ध की आशंका तेज हो गई है। इसे 1980 के दशक में इराक के साथ युद्ध के बाद ईरान पर सबसे बड़ा हमला माना जा रहा है। जानकारों की मानें तो पहाड़ों में भी ईरान के परमाणु ठिकाने हैं, जिसे अमेरिकी मदद के बिना इजरायल खत्म नहीं कर पाएगा। उनका कहना है कि इजरायल सिर्फ ईरानी परमाणु ठिकाने को ही नहीं, बल्कि उसकी खुमैनी सरकार को भी हटाना चाहता है। इसलिए इतना खतरनाक हालात पैदा किए हुए है। जाहिर है कि बिना अमेरिका, यूरोप व एशिया के नाटो देशों के इशारे के वह ऐसी हिमाकत कदापि नहीं कर सकता है। वहीं, हमले के बाद आईडीएफ ने कहा कि ईरान लगातार इजरायल के खिलाफ प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से आतंकी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है और अपने प्रॉक्सी गुटों के जरिए क्षेत्र में अस्थिरता फैला रहा है। इससे साफ है कि देर सबेर वह दूसरे मुस्लिम सरगना देश तुर्किये और तीसरे इस्लामिक आतंकवादी सरगना देश पाकिस्तान के ऊपर भी हमला अवश्य करेगा। फिलवक्त चूंकि पाकिस्तान व तुर्किये अमेरिका के सरपरस्त देश हैं, इसलिए इनकी बारी कब आएगी, अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। सिर्फ वक्त का इंतजार करना ही श्रेयस्कर होगा।

इस प्रकार देखा जाए तो इजरायल-ईरान विवाद से जुड़े इस पूरे मसले पर वर्ल्ड इस्लामिक काउंसिल (ओआईसी) के लगभग 56 मुस्लिम सदस्य देश भी आपस में विभाजित हैं, क्योंकि जो अमेरिका के सरपरस्त हैं, वो चुप्पी साधे बैठे हैं। वहीं जो रूस-चीन-उत्तर कोरिया के समर्थक हैं, वो ईरान के पक्ष में एकजुट हो सकते हैं। चूंकि अमेरिका ने बड़ी सफाई से खुद को अलग कर लिया है, इसलिए अब यह रूस-चीन के ऊपर है कि वो खुलकर मैदान में आएंगे या नहीं। जबकि गुटनिरपेक्ष देश भारत ने रूस-यूक्रेन युद्ध की तरह इजरायल-ईरान युद्ध में भी अपनी तटस्थता बरकरार रखी है।

निर्देशक आरएस प्रसन्ना ने बनाई अपनी दूसरी फिल्म



निर्देशक आरएस प्रसन्ना ने अपने करियर की दूसरी फिल्म 'सितारे जमीन पर' बनाई है। इस फिल्म में आमिर खान के अलावा कई दिव्यांग बच्चे हैं। यह फिल्म आगामी 20 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।



निर्देशक आरएस प्रसन्ना ने अपने करियर की दूसरी फिल्म 'सितारे जमीन पर' बनाई है। इस फिल्म में आमिर खान के अलावा कई दिव्यांग बच्चे हैं। यह फिल्म 20 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म की रिलीज से पहले निर्देशक ने अपने फिल्मी करियर के बारे में बात की है। उन्होंने तमिल फिल्मों को रिजेक्ट करने और आमिर को अपनी फिल्म में लेने के बारे में अहम बातें बताई हैं।

तमिल फिल्में नहीं करने का कोई अफसोस नहीं

जूम के साथ बातचीत में आरएस प्रसन्ना ने बताया कि वह तमिल फिल्मों के साथ क्यों नहीं जुड़े। उन्होंने कहा 'इसके पीछे की वजह बहुत निजी है। मेरे दिल से आवाज आई थी। मुझे इसका कोई अफसोस नहीं। मुझे अफसोस होता अगर मैं सिनेमा में नहीं होता।'

मेरे दिमाग में सिर्फ आमिर खान थे

आर एस प्रसन्ना ने यह भी बताया कि उन्होंने आमिर को कैसे अपनी फिल्म में लिया। उन्होंने कहा वह हमेशा सोचा करते थे कि आमिर खान मेरी फिल्म के रोल के लिए और निमार्ता के लिए एकदम सही इंसान हैं। उन्होंने कहा 'फिल्म को प्रोड्यूज करने के लिए भी बहुत संवेदनशीलता और ईमानदारी की जरूरत होती है। ये सभी चीजें आमिर खान में हैं। इसीलिए वही मेरे दिमाग में थे। जब मैं सोच रहा था कि मैं किसे अपनी फिल्म में लूं, तो मेरे दिमाग में सिर्फ आमिर खान का नाम आ रहा था।'

इस तरह आमिर के पास पहुंचे प्रसन्ना

निर्देशक ने बताया कि वह सोच रहे थे कि क्या आमिर खान उनकी फिल्म में काम करेंगे क्योंकि यह उनका दूसरा प्रोजेक्ट था।

उन्होंने सोचा कि आमिर खान इस कहानी के साथ न्याय कर सकते हैं। उन्होंने कहा 'हम एक प्रक्रिया के तहत आमिर के पास पहुंचे। वह उस वक्त लाल सिंह चड्ढा शूट कर रहे थे। उन्होंने मेरे पास एक बहुत अच्छा पैगाम भेजा कि आप हमें कुछ वक्त दें। आखिरकार उन्होंने मेरे साथ फिल्म की।'

सूच्य है कि 'सितारे जमीन पर' स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म है। इसमें आमिर खान के साथ जेनेलिया देशमुख हैं। यह फिल्म स्पैनिश फिल्म चैंपियंस की रीमेक है। यह फिल्म साल 2007 में रिलीज हुई फिल्म 'तारे जमीन पर' की सीक्वल है।



'हैप्पी एनिवर्सरी लव', करण देओल ने पत्नी दृशा के लिए लिखा प्यारा नोट

गत दिनों 18 जून को सनी देओल के बेटे करण की वेडिंग एनीवर्सरी है। इस खास पर करण ने सोशल मीडिया हैंडल पर अपनी और पत्नी दृशा की कई शानदार तस्वीरों का एक वीडियो कोलाज शेयर किया, जिसमें शादी से लेकर अभी तक की कई शानदार तस्वीरें शामिल हैं। इन खास तस्वीरों के साथ करण ने पत्नी के लिए एक प्यारा नोट भी लिखा।

करण ने आज बुधवार को इंस्टाग्राम पर पत्नी और अपनी कई बेहतरीन तस्वीरें शेयर कीं और कैप्शन में लिखा, 'हैप्पी एनिवर्सरी लव ! तुम्हारे साथ बिताया हर दिन मुझे एक बेहतर इंसान बनाता है। तुम्हारा प्यार, ताकत और अनुग्रह मुझे शब्दों से ज्यादा प्रेरित करता है। हर गुजरते दिन के साथ मैं तुमसे और ज्यादा प्यार करने लगा हूं। यहां और भी ज्यादा प्यार, सफर और साथ में ना भूल पाने वाली शानदार यादें हैं। हमेशा तुमसे प्यार करता हूं।

पिता के अंतिम संस्कार में रो पड़ीं मन्नारा चोपड़ा, अर्थी को दिया कंधा



मुंबई। बुधवार को आयोजित अपने पिता रमन राय हांडा के अंतिम संस्कार में अभिनेत्री मन्नारा चोपड़ा और उनकी बहन मिताली हांडा को दुख में डूबते हुए देखा गया। बिग बॉस 18 की पूर्व प्रतियोगी ने दाह संस्कार के दौरान अपने पिता की अर्थी को कंधा देने की जिद करते हुए स्पष्ट रूप से दुखी दिखाई दीं।

मन्नारा के पिता की अंतिम यात्रा

मन्नारा चोपड़ा के पिता का अंतिम संस्कार मुंबई के ओशिवारा श्मशान घाट पर किया गया। कहा जा रहा है कि प्रियंका चोपड़ा और परिणीति चोपड़ा अपने काम के कारण अपने चाचा के अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो सकीं। मनारा चोपड़ा के पिता के अंतिम संस्कार के दौरान बारिश हो रही थी। भारी बारिश के बीच मन्नारा चोपड़ा और मिताली चोपड़ा ने अपने पिता की अर्थी को श्मशान घाट तक पहुंचाया। दोनों बहनों ने पूरी हिम्मत और भावना के साथ अपने पिता की अंतिम यात्रा में भाग लिया।

रोते-रोते मन्नारा चोपड़ा बेहोश होने लगीं

मन्नारा खुद को संभालने की पूरी कोशिश करती दिखीं, जबकि मिताली अपने पिता की मौत के कारण गहरे सदमे में दिखीं। उनके चेहरे पर दुख और दर्द साफ दिखाई दे रहा था। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें पिता को आखिरी बार देखने के बाद मन्नारा बेकाबू हालत में दिखीं। अंतिम संस्कार के दौरान मन्नारा रोते हुए बेहोश होती दिखीं। उनका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

16 जून को मन्नारा चोपड़ा ने अपने पिता के निधन की घोषणा करते हुए एक आधिकारिक बयान जारी किया। नोट में लिखा था, ‍ब‍हुत दुख और पीड़ा के साथ, हम अपने प्यारे पिता के दुखद निधन की सूचना देते हैं, जो 16 जून को हमें छोड़कर स्वर्ग सिधार गए। वह हमारे परिवार के लिए ताकत का स्तंभ थे।‍ रमन राय हांडा दिल्ली उच्च न्यायालय के तीस हजारी कोर्ट में प्रैक्टिस करने वाले एक प्रतिष्ठित वकील थे। उन्होंने आभूषण डिजाइनर कामिनी चोपड़ा हांडा से शादी की थी और दो बेटियों मन्नारा और उनकी छोटी बहन मिताली हांडा, जो एक उद्यमी और फैशन स्टाइलिस्ट थीं, के समर्पित पिता थे। 26 सितम्बर को नई दिल्ली में जन्मे, उनकी तीक्ष्ण कानूनी सूझ-बूझ और गर्मजोशी से भरे, स्थिर व्यक्तित्व ने उन्हें अपने परिवार की रीढ़ बना दिया, तथा उन्हें परिवार की अटूट शक्ति के रूप में याद किया जाता है।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस निकट रीड्स साहब का धर्मशाला
से मुद्रित एवं 45, बादशाह बाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित।
संपादक- पंकज धर द्विवेदी
संपर्क सूत्र : ghoonghatkibagawat37@gmail.com